गरवी गुजरात

PRGI No. GUJHIN/2011/39228

गरवी गुजरात

PUBLISHED HINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 16
अंक : 030
दि. 30.05.2026,
शनिवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

सीमा पार हथियार तस्करी और आतंकी साजिश पर एनआईए का बड़ा प्रहार, चार राज्यों में 12 ठिकानों पर एक साथ छापेमारी

देश की सुरक्षा के खिलाफ रची जा रही एक बड़ी साजिश को नाकाम करने की दिशा में राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने व्यापक कार्रवाई करते हुए उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार और राजस्थान में 12 स्थानों पर एक साथ छापेमारी की है। यह कार्रवाई सीमा पार हथियार तस्करी, ड्रोन के जरिए भारत में भेजे गए विस्फोटकों और संदिग्ध आतंकी नेटवर्क से जुड़े मामलों की जांच के तहत की गई। अधिकारियों का मानना है कि यह अभियान केवल हथियारों की तस्करी तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके तार एक बड़े अंतरराष्ट्रीय आतंकी नेटवर्क से जुड़े हो सकते हैं, जिसका उद्देश्य देश के विभिन्न हिस्सों में बड़े पैमाने पर हिंसक घटनाओं को अंजाम देना था।

जांच एजेंसियों के अनुसार इस पूरे नेटवर्क का संचालन पाकिस्तान में बैठे आतंकी तत्वों द्वारा किया जा रहा था। विशेष रूप से पाकिस्तानी आतंकी जसवीर चौधरी का नाम जांच के केंद्र में है। खुफिया एजेंसियों को मिले इनपुट के अनुसार जसवीर चौधरी भारत में सक्रिय अपने सहयोगियों और संपर्क सूत्रों के माध्यम से पंजाब, दिल्ली तथा अन्य राज्यों में आतंकी गतिविधियों की योजना बना रहा था। उसका उद्देश्य सीमा पार से हथियार, गोला-बारूद और विस्फोटक सामग्री पहुंचाकर देश के विभिन्न हिस्सों में दहशत फैलाना था।

शुक्रवार तड़के शुरू हुई इस कार्रवाई में एनआईए की कई टीमों ने एक साथ अलग-अलग राज्यों में दबिश दी। उत्तर प्रदेश में पांच स्थानों, महाराष्ट्र में तीन तथा बिहार और राजस्थान में दो-दो स्थानों पर तलाशी अभियान चलाया गया। सुरक्षा एजेंसियों ने संदिग्ध व्यक्तियों के ठिकानों की गहन जांच की और वहां से महत्वपूर्ण दस्तावेज, मोबाइल फोन, लैपटॉप, डिजिटल उपकरण तथा अन्य इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्य जब्त किए। इन सामग्रियों की जांच से नेटवर्क के अन्य सदस्यों और उनकी गतिविधियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलने की संभावना जताई जा रही है।

इस मामले की शुरुआत फरवरी महीने में हुई थी, जब पंजाब पुलिस की राज्य विशेष अभियान प्रकोष्ठ (एसएसओसी) को खुफिया जानकारी प्राप्त हुई थी कि सीमा पार से भारत में अवैध हथियार और विस्फोटक सामग्री भेजी जा रही है। प्रारंभिक जांच में कई चौंकाने वाले तथ्य सामने आए। पुलिस को जानकारी मिली कि पाकिस्तान में बैठे संचालकों के निर्देश पर भारतीय सहयोगियों ने सीमा क्षेत्र में ड्रोन के जरिए गिराई गई हथियारों की खेप प्राप्त की थी। इनमें आधुनिक हथियार, गोला-बारूद और इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (आईईडी) बनाने में इस्तेमाल होने वाली सामग्री शामिल थी।

जांच के दौरान यह भी सामने आया कि हथियारों की यह खेप किसी व्यक्तिगत अपराध या सीमित गतिविधि के लिए नहीं थी, बल्कि इसके पीछे एक सुनियोजित आतंकी साजिश थी। सुरक्षा एजेंसियों को आशंका है कि इन हथियारों और विस्फोटकों का इस्तेमाल पंजाब, दिल्ली और अन्य महत्वपूर्ण शहरों में एक साथ कई स्थानों पर आईईडी विस्फोट करने के लिए किया जाना था। यदि यह साजिश सफल हो जाती तो बड़े पैमाने पर जान-माल का नुकसान हो सकता था और देशभर में भय एवं अस्थिरता का माहौल पैदा हो सकता था।

प्रारंभिक जांच में अंतरराष्ट्रीय कनेक्शन सामने आने के बाद मामला एनआईए को सौंप दिया गया। 21 मार्च को राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने औपचारिक रूप से जांच अपने हाथ में ली और इसके बाद पूरे नेटवर्क की गहराई से पड़ताल शुरू की गई। एजेंसी ने विभिन्न राज्यों में सक्रिय संदिग्धों की गतिविधियों, उनके वित्तीय लेन-देन, संपर्क सूत्रों और डिजिटल संचार की निगरानी की। इसी क्रम में मिले साक्ष्यों के आधार पर शुक्रवार को बड़े पैमाने पर छापेमारी की गई।

सुरक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि हाल के वर्षों में पाकिस्तान स्थित आतंकी संगठन और उनके सहयोगी भारत में हथियार पहुंचाने के लिए ड्रोन तकनीक का तेजी से उपयोग कर रहे हैं। पंजाब और जम्मू-कश्मीर से सटे सीमावर्ती क्षेत्रों में कई बार ड्रोन के जरिए हथियार, गोला-बारूद, नकदी और मादक पदार्थ गिराए जाने की घटनाएं सामने आ चुकी हैं। इससे सुरक्षा एजेंसियों के सामने नई चुनौतियां खड़ी हुई हैं। ड्रोन तकनीक का उपयोग तस्करी और आतंकी गतिविधियों के लिए किया जाना राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा माना जा रहा है।

एनआईए अधिकारियों का कहना है कि वर्तमान अभियान का उद्देश्य केवल कुछ संदिग्धों को हिरासत में लेना नहीं है, बल्कि पूरे नेटवर्क की जड़ों तक पहुंचना है। एजेंसी यह पता लगाने का प्रयास कर रही है कि भारत में सक्रिय कौन-कौन से व्यक्ति सीमा पार बैठे संचालकों के संपर्क में थे, हथियारों की खेप किस प्रकार वितरित की जानी थी और संभावित हमलों के लिए किन स्थानों को निशाना बनाया गया था। जांच में वित्तीय लेन-देन और हवाला नेटवर्क की भूमिका की भी पड़ताल की जा रही है। अधिकारियों के अनुसार छापेमारी के दौरान मिले डिजिटल साक्ष्य और दस्तावेज जांच को नई दिशा दे सकते हैं। संभावना है कि आने वाले दिनों में इस मामले में और गिरफ्तारियां हो सकती हैं तथा कई अन्य राज्यों में भी कार्रवाई का दायरा बढ़ाया जा सकता है। सुरक्षा एजेंसियां इस संभावना से भी इनकार नहीं कर रही हैं कि नेटवर्क के कुछ सदस्य अभी भी सक्रिय हो सकते हैं और उन्हें पकड़ने के लिए विशेष अभियान चलाए जा रहे हैं।

राष्ट्रीय सुरक्षा के दृष्टिकोण से यह कार्रवाई अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जा रही है। जिस प्रकार सीमा पार से हथियारों की तस्करी कर देश के भीतर आतंकी नेटवर्क को मजबूत करने का प्रयास किया जा रहा था, वह सुरक्षा एजेंसियों के लिए बड़ी चुनौती थी। एनआईए की इस कार्रवाई ने न केवल एक संभावित आतंकी साजिश को उजागर किया है, बल्कि यह भी संकेत दिया है कि देश की सुरक्षा एजेंसियां ऐसे नेटवर्कों पर लगातार नजर बनाए हुए हैं और किसी भी खतरे से निपटने के लिए पूरी तरह सतर्क हैं।

फिलहाल जांच जारी है और एजेंसियां पूरे नेटवर्क के हर पहलू को खंगाल रही हैं। आने वाले दिनों में इस मामले से जुड़े और भी महत्वपूर्ण खुलासे होने की संभावना है, जो सीमा पार आतंकवाद और हथियार तस्करी के तंत्र को समझने में मदद कर सकते हैं। देशभर की सुरक्षा एजेंसियां इस मामले को अत्यंत संवेदनशील मानते हुए हर स्तर पर कार्रवाई कर रही हैं ताकि भविष्य में किसी भी आतंकी साजिश को समय रहते विफल किया जा सके।

दार्जिलिंग शिक्षक भर्ती घोटाले में सीबीआई जांच का रास्ता साफ, सरकार के रुख बदलने से तेज होगी कार्रवाई

कोलकाता। दार्जिलिंग पर्वतीय क्षेत्र में शिक्षक नियुक्तियों को लेकर वर्षों से चल रहा विवाद अब एक निर्णायक मोड़ पर पहुंच गया है। गोरखा टेरिटोरियल एडमिनिस्ट्रेशन (जीटीए) के माध्यम से हुई कथित अनियमित नियुक्तियों की जांच को लेकर राज्य सरकार के बदले रुख ने केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) की कार्रवाई का रास्ता लगभग पूरी तरह साफ कर दिया है। राज्य सरकार द्वारा सुप्रीम कोर्ट में दायर याचिका वापस लेने के संकेत दिए जाने के बाद अब लंबे समय से रुकी हुई जांच प्रक्रिया के आगे बढ़ने की संभावना तेज हो गई है। इस घटनाक्रम को पश्चिम बंगाल की राजनीति, प्रशासन और पहाड़ की सत्ता व्यवस्था के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ माना जा रहा है।

नवान्न में आयोजित एक उच्चस्तरीय बैठक के बाद मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने स्पष्ट संकेत दिए कि उनकी सरकार इस मामले में सीबीआई जांच के मार्ग में कोई बाधा नहीं बनने वाली है। उन्होंने कहा कि यदि भ्रष्टाचार के आरोपों की निष्पक्ष जांच करनी है तो एजेंसियों को स्वतंत्र रूप से काम करने

दिया जाना चाहिए। मुख्यमंत्री ने मुख्य सचिव को आवश्यक कानूनी प्रक्रिया पूरी करने और सुप्रीम कोर्ट में लंबित याचिका के संबंध में उचित कदम उठाने के निर्देश भी दिए हैं।

दार्जिलिंग शिक्षक भर्ती विवाद पिछले कई वर्षों से राजनीतिक और कानूनी बहस का विषय बना हुआ है। आरोप है कि जीटीए के तहत दार्जिलिंग और आसपास के पर्वतीय क्षेत्रों में 400 से अधिक शिक्षकों की नियुक्तियां नियमों की अनदेखी करते हुए की गई थीं। शिकायतकर्ताओं का दावा है कि नियुक्ति प्रक्रिया में पारदर्शिता नहीं बरती गई और पात्रता, योग्यता तथा चयन संबंधी मानकों को दरकिनार कर कई लोगों को नौकरी दी गई। इसी कारण यह मामला अदालत तक पहुंचा और बाद में इसकी जांच की मांग तेज होती गई।

कलकत्ता हाई कोर्ट ने मामले की गंभीरता को देखते हुए पहले ही सीबीआई जांच के आदेश दिए थे। अदालत का मानना था कि आरोपों की निष्पक्ष और व्यापक जांच आवश्यक है, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि नियुक्ति प्रक्रिया में किसी प्रकार की वित्तीय अनियमितता, राजनीतिक हस्तक्षेप या सत्ता के दुरुपयोग की भूमिका रही या नहीं। हालांकि तत्कालीन राज्य सरकार ने हाई कोर्ट के आदेश को चुनौती देते हुए सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। इसके बाद कानूनी प्रक्रिया लंबी खिंच गई और जांच की रफ्तार लगभग थम गई।

अब सरकार के रुख में आए बदलाव को इस पूरे मामले में सबसे बड़ा घटनाक्रम माना जा रहा है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यदि राज्य सरकार वास्तव में अपनी याचिका वापस लेती है तो सीबीआई को जांच आगे बढ़ाने में किसी प्रकार की कानूनी बाधा का सामना नहीं करना पड़ेगा। इससे उन सभी आरोपों और शिकायतों की गहन जांच संभव हो सकेगी, जिनके आधार पर भर्ती प्रक्रिया पर सवाल उठाए गए थे। इस मामले में कई चर्चित नाम भी समय-समय पर सामने आते रहे हैं। आरोपों के दायरे में पूर्व शिक्षा मंत्री पार्थ चटर्जी का नाम भी लिया गया था। इसके अलावा पहाड़ की राजनीति से जुड़े प्रमुख नेता बिनय तमांग तथा तृणमूल कांग्रेस के युवा नेता तृणांकुर भट्टाचार्य पर भी विभिन्न शिकायतकर्ताओं ने सवाल उठाए थे। हालांकि इन आरोपों की सत्यता की पुष्टि जांच के बाद ही हो सकेगी और फिलहाल किसी भी व्यक्ति को दोषी ठहराना उचित नहीं माना जा सकता। लेकिन इतना जरूर है कि जांच आगे बढ़ने के साथ कई महत्वपूर्ण तथ्यों के सामने आने की संभावना जताई जा रही है। दार्जिलिंग और पहाड़ी क्षेत्रों में शिक्षक नियुक्तियों का मुद्दा केवल प्रशासनिक नहीं बल्कि सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से भी अत्यंत संवेदनशील माना जाता है।

डीईआरसी में खाली पदों पर सुप्रीम कोर्ट की सख्ती, दो माह में नियुक्तियां पूरी करने का निर्देश

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में बिजली क्षेत्र के नियमन और उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा से जुड़ी महत्वपूर्ण संस्था दिल्ली विद्युत नियामक आयोग (डीईआरसी) में लंबे समय से रिक्त पड़े पदों को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने कड़ा रुख अपनाया है। शीर्ष अदालत ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि आयोग जैसे महत्वपूर्ण नियामक निकाय को लंबे समय तक अधूरा नहीं छोड़ा जा सकता। इसी के मद्देनजर सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली सरकार द्वारा गठित खोज एवं चयन समिति को निर्देश दिया है कि वह आयोग के अध्यक्ष और दो सदस्यों के रिक्त पदों को अधिकतम दो महीने के भीतर भरने की प्रक्रिया पूरी करे।

सुप्रीम कोर्ट का यह निर्देश ऐसे समय आया है जब डीईआरसी में लंबे समय से महत्वपूर्ण पद खाली होने के कारण आयोग के कामकाज और निर्णय प्रक्रिया पर असर पड़ने की आशंकाएं जताई जा रही थीं। बिजली दरों के निर्धारण, वितरण कंपनियों की निगरानी, उपभोक्ता शिकायतों के समाधान तथा ऊर्जा क्षेत्र से जुड़े नीतिगत निर्णयों में डीईआरसी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। ऐसे में आयोग में नेतृत्व और सदस्यों की कमी को लेकर विभिन्न संगठनों और उपभोक्ता समूहों ने भी चिंता व्यक्त की थी।

मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत की अध्यक्षता वाली पीठ, जिसमें न्यायमूर्ति जोयमाल्या बागची और न्यायमूर्ति विपुल एम. पंचोली भी शामिल थे, ने मामले की सुनवाई के दौरान दिल्ली सरकार द्वारा जारी अधिसूचना पर विचार किया। सरकार ने अदालत को बताया कि पूर्व में दिए गए निर्देशों के अनुपालन में 27 मई को एक खोज एवं चयन समिति का गठन कर दिया गया है, जो डीईआरसी के रिक्त पदों पर योग्य उम्मीदवारों के चयन की प्रक्रिया पूरी करेगी। सुनवाई के दौरान अदालत ने स्पष्ट किया कि केवल समिति का गठन कर देना पर्याप्त नहीं है, बल्कि समयबद्ध तरीके से नियुक्तियां सुनिश्चित करना भी आवश्यक है। अदालत ने चयन समिति को निर्देश दिया कि वह पूरी गंभीरता और पारदर्शिता के साथ प्रक्रिया को आगे बढ़ाए तथा दो महीने के भीतर अध्यक्ष और दो सदस्यों की नियुक्ति सुनिश्चित करने का प्रयास करे। न्यायालय ने यह भी कहा कि नियामक संस्थाओं की कार्यक्षमता बनाए रखने के लिए रिक्त पदों को लंबे समय तक खाली नहीं रखा जाना चाहिए।

पीठ ने दिल्ली सरकार को भी निर्देश दिया कि दो महीने बाद मामले की अगली सुनवाई के समय एक अनुपालन शपथपत्र दाखिल किया जाए, जिसमें नियुक्ति प्रक्रिया की प्रगति और उठाए गए कदमों का विस्तृत विवरण हो। इससे स्पष्ट है कि सुप्रीम कोर्ट केवल निर्देश देकर मामला छोड़ना नहीं चाहता, बल्कि नियुक्ति प्रक्रिया की निगरानी भी करेगा ताकि आदेशों का प्रभावी पालन सुनिश्चित किया जा सके।

मामले की सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ता संस्था एनर्जी वाचडाग की ओर से पेश अधिवक्ता प्रणव सचदेवा ने अदालत से अनुरोध किया कि नियुक्तियों की प्रक्रिया को और अधिक तेज किया जाए तथा चयन समिति को एक महीने के भीतर रिक्त पद भरने का निर्देश दिया जाए। उनका तर्क था कि आयोग में लंबे समय से रिक्तियां बनी हुई हैं और इसका प्रतिकूल प्रभाव बिजली क्षेत्र के नियमन पर पड़ रहा है। हालांकि अदालत ने सभी व्यावहारिक पहलुओं को ध्यान में रखते हुए दो महीने की समयसीमा को उचित माना।

विशेषज्ञों का मानना है कि डीईआरसी जैसे नियामक निकाय की मजबूती सीधे तौर पर लाखों बिजली उपभोक्ताओं के हितों से जुड़ी हुई है। आयोग ही बिजली दरों को मंजूरी देने, वितरण कंपनियों के प्रदर्शन की समीक्षा करने और उपभोक्ताओं तथा बिजली कंपनियों के बीच उत्पन्न विवादों के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ऐसे में शीर्ष पदों पर नियुक्तियों में देरी से न केवल प्रशासनिक निर्णय प्रभावित होते हैं, बल्कि कई महत्वपूर्ण मामलों का निस्तारण भी लंबित हो सकता है।

ऊर्जा क्षेत्र के जानकारों के अनुसार, दिल्ली जैसे महानगर में बिजली व्यवस्था का सुचारु संचालन सुनिश्चित करने के लिए एक सक्रिय और पूर्ण रूप से कार्यरत नियामक आयोग का होना आवश्यक है। राजधानी में करोड़ों उपभोक्ता बिजली सेवाओं पर निर्भर हैं और किसी भी नीतिगत निर्णय का व्यापक प्रभाव पड़ता है।

भारत-म्यांमार रिश्तों को मिलेगी नई गति, व्यापार, सुरक्षा और रणनीतिक साझेदारी पर होगी निर्णायक बातचीत

नई दिल्ली। भारत और म्यांमार के बीच द्विपक्षीय संबंधों को नई दिशा देने वाली एक महत्वपूर्ण कूटनीतिक पहल के तहत म्यांमार के राष्ट्रपति चार दिवसीय आधिकारिक यात्रा पर भारत पहुंच रहे हैं। 30 मई से 2 जून तक चलने वाले इस दौरे को दोनों देशों के संबंधों के लिहाज से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है। ऐसे समय में जब दक्षिण एशिया और दक्षिण-पूर्व एशिया का सामरिक परिदृश्य तेजी से बदल रहा है, यह यात्रा केवल एक औपचारिक राजनयिक कार्यक्रम नहीं बल्कि क्षेत्रीय सुरक्षा, आर्थिक सहयोग और रणनीतिक संतुलन से जुड़ा अहम अवसर मानी जा रही है।

विदेश मंत्रालय के अनुसार म्यांमार के राष्ट्रपति अपने प्रवास के दौरान नई दिल्ली, बोधगया और मुंबई का दौरा करेंगे। यात्रा का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ होने वाली उच्चस्तरीय बैठक होगी, जिसमें सीमा सुरक्षा, व्यापार, संपर्क परियोजनाओं, निवेश, सांस्कृतिक सहयोग और क्षेत्रीय चुनौतियों सहित कई अहम मुद्दों पर व्यापक चर्चा की जाएगी। दोनों देशों के शीर्ष नेतृत्व के बीच होने वाली यह वार्ता आने वाले वर्षों में भारत-म्यांमार संबंधों की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

भारत और म्यांमार के संबंध केवल पड़ोसी देशों के रिश्तों तक सीमित नहीं हैं। दोनों देशों के बीच हजारों वर्षों पुराने सांस्कृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक संबंध मौजूद हैं। बौद्ध धर्म दोनों देशों को जोड़ने वाली सबसे मजबूत कड़ी माना जाता है। यही कारण है कि राष्ट्रपति के कार्यक्रम में बोधगया का दौरा भी शामिल किया गया है। बोधगया बौद्ध धर्मावलंबियों के लिए अत्यंत पवित्र स्थल है और इसे दोनों

देशों के बीच सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक संबंधों का प्रतीक माना जाता है।

हालांकि इस यात्रा का सबसे महत्वपूर्ण पहलू सुरक्षा और सीमा प्रबंधन से जुड़ा हुआ है। भारत और म्यांमार लगभग 1,600 किलोमीटर लंबी अंतरराष्ट्रीय सीमा साझा करते हैं। यह सीमा अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर और मिजोरम जैसे पूर्वोत्तर राज्यों से होकर गुजरती है। इन क्षेत्रों में लंबे समय से सक्रिय उग्रवादी संगठनों और सीमा पार गतिविधियों को नियंत्रित करने के लिए दोनों देशों के बीच सहयोग बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है। सुरक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि पूर्वोत्तर भारत में स्थिरता और शांति बनाए रखने के लिए म्यांमार के साथ बेहतर समन्वय आवश्यक है।

पिछले कुछ वर्षों में भारत और म्यांमार ने संयुक्त सुरक्षा अभियानों के माध्यम से सीमा पार सक्रिय उग्रवादी समूहों के खिलाफ कार्रवाई की है। माना जा रहा है कि इस यात्रा के दौरान दोनों देश सुरक्षा सहयोग को और मजबूत करने के उपायों पर चर्चा करेंगे। सीमा प्रबंधन, खुफिया सूचनाओं के आदान-प्रदान और अवैध गतिविधियों पर नियंत्रण जैसे विषय वार्ता के केंद्र में रह सकते हैं।

भारत की 'एक्ट ईस्ट नीति' के संदर्भ में भी म्यांमार का महत्व बेहद बढ़ जाता है। दक्षिण-पूर्व एशिया तक पहुंचने के लिए म्यांमार भारत का सबसे महत्वपूर्ण भूमि संपर्क मार्ग है। भारत लंबे समय से म्यांमार के माध्यम से आसियान देशों के साथ अपने व्यापारिक और आर्थिक संबंधों को मजबूत करने की रणनीति पर काम कर रहा है। म्यांमार इस रणनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। विशेषज्ञों का मानना है कि भारत क्षेत्रीय संतुलन बनाए रखने और अपने रणनीतिक हितों की रक्षा के लिए म्यांमार के साथ दीर्घकालिक सहयोग को प्राथमिकता दे रहा है।

यात्रा से पहले म्यांमार के कुछ समूहों द्वारा संभावित विरोध प्रदर्शनों की चर्चाएं भी सामने आई हैं। हालांकि विदेश मंत्रालय ने इस मुद्दे पर कोई विस्तृत टिप्पणी करने से परहेज किया है और स्पष्ट किया है कि यह एक आधिकारिक राजकीय यात्रा है। भारत सरकार का ध्यान दोनों देशों के बीच सहयोग को मजबूत करने और सकारात्मक एजेंडे को आगे बढ़ाने पर केंद्रित है। विदेश मंत्रालय का कहना है कि भारत और म्यांमार केवल रणनीतिक साझेदार ही नहीं बल्कि ऐतिहासिक रूप से जुड़े हुए मित्र देश हैं। दोनों देशों के बीच व्यापार, निवेश, सुरक्षा, संस्कृति और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में सहयोग की अपार संभावनाएं हैं। यही कारण है कि इस यात्रा को केवल राजनयिक कार्यक्रम नहीं बल्कि भविष्य की साझेदारी के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर माना जा रहा है।

विशेषज्ञों का मानना है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और म्यांमार के राष्ट्रपति के बीच होने वाली वार्ता से कई महत्वपूर्ण समझौतों और नई पहलों का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

गरवी गुजरात
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2002

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
गरवी गुजरात हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

जरूरी सत्ता परिवर्तन

कभी भाजपा के गढ़ रहे कर्नाटक में कांग्रेस की सत्ता वापसी में डी.के. शिवकुमार की बड़ी भूमिका मानी जाती रही है। जिस ऊर्जा व तेवरों से, उन्होंने पिछला विधानसभा चुनाव कांग्रेस सगंठन व कार्यकर्ताओं को एकजुट करके लड़ाया, उससे उम्मीद थी सरकार बनने के बाद उनकी ही ताजपोशी होगी। वे न केवल संगठन के सूत्रधार ही थे, बल्कि उन्होंने केंद्रीय एजेंसियों का त्रास भी झेला था। बहरहाल, कर्नाटक के मुख्यमंत्री पद से सिद्धारमैया के इस्तीफे ने अब तक उप मुख्यमंत्री की भूमिका निभाते रहे डी.के. शिवकुमार की पदोन्नति का मार्ग प्रशस्त किया है। देर से ही सही कांग्रेस हाईकमान ने उस चूक को दुरुस्त किया है, जिसके चलते कई राज्यों में नेतृत्व चयन की गफलत की बड़ी राजनीतिक कीमत चुकानी पड़ी थी। बहरहाल, 77 वर्षीय सिद्धारमैया की सरकार ने पिछले ही सप्ताह अपने कार्यकाल के तीन वर्ष पूरे किए थे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस हाईकमान के निर्देश पर उन्होंने मुख्यमंत्री पद छोड़ा है। हालांकि, राज्यभर में उनके समर्थकों द्वारा किए जा रहे विरोध प्रदर्शन संकेत देते हैं कि इस नेतृत्व परिवर्तन को एक सामान्य बदलाव के रूप में नहीं देखा जा सकता। कयास लगाए जा रहे हैं कि मौजूदा बदलाव मई 2023 के विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की जीत के बाद सत्ता साझाकरण की बारी-बारी से व्यवस्था की अटकलों को बल देता प्रतीत होता है। हालांकि, कांग्रेस पार्टी इस बात से इनकार करती है लेकिन ऐसा लगता है कि सत्ता के बंटवारे के इस समझौते ने कर्नाटक में पार्टी की आंतरिक गतिविधियों को प्रभावित किया है। इस बदलाव के लिये लंबे समय तक प्रतीक्षारत रहे डी.के. शिवकुमार अब इस प्रतिष्ठित पद के लिये और इंतजार करते नहीं दिखायी दे रहे थे। जाहिरा तौर पर पहले की तरह वर्ष 2028 के चुनावी संग्राम के लिये पार्टी को तैयार करने की जिम्मेदारी भी उन्हीं की होगी। उन्हें अगले दो वर्षों में राज्य में सुशासन को प्राथमिकता देनी होगी। इस बात को कुछ देर से ही सही, पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व ने महसूस तो किया है।

राजनीतिक पंडित मान रहे हैं कि कांग्रेस नेतृत्व को देर-सवेर अहसास होने लगा था कि जिस कर्नाटक को भाजपा दक्षिण का द्वार बताकर विगत में वर्चस्व बना चुकी है, वहां पार्टी को नेतृत्व-द्वंद्व का नुकसान हो सकता था। जिसकी पूर्ति तेज-तर्रार डी.के. शिवकुमार जैसे नेतृत्व से ही संभव हो सकती है। निर्विवाद रूप से वे अपेक्षाकृत कम उम्र के जुझारू राजनेता के रूप में पहचान रखते हैं। उन्हें कुशल चुनावी रणनीतिकार के रूप में जाना जाता रहा है। बहरहाल, अब कांग्रेस पार्टी के सामने सबसे बड़ी चुनौती राज्य में पिछड़े वर्गों, अल्पसंख्यकों और दलितों का समर्थन बरकरार रखना है। माना जाता है कि इन वर्गों में सिद्धारमैया की खासी मजबूत पकड़ रही है। वहीं दूसरी ओर निवर्तमान मुख्यमंत्री द्वारा केंद्र की राजनीति में भूमिका को स्वीकार करने के लिये दिए गए प्रस्ताव पर अनिच्छा जताने ने स्थिति को और जटिल बना दिया है। बहरहाल, इसी तरह के अनिर्णय व असमंजस की स्थिति का नुकसान विगत में कांग्रेस कई राज्यों में उठा चुकी है। गौरतलब है कि कांग्रेस ने छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को 2018-23 तक पद पर बनाये रखा, जबकि उनके सहयोगी और प्रतिद्वंद्वी टीएस सिंह देव लगातार उन पर दबाव डाल रहे थे। पंजाब में, पार्टी ने साल 2022 के विधानसभा चुनावों से ठीक पांच महीने पहले कैप्टन अमरिंदर को मुख्यमंत्री पद से हटा दिया था। सत्ता विरोधी लहर का मुकाबला करने के उद्देश्य से उठाया गया यह कठोर कदम कांग्रेस को बड़ा झटका दे गया था। कर्नाटक कांग्रेस के लिये दक्षिणी राज्यों में पकड़ बनाने की नीतियों की वजह से एक महत्वपूर्ण राज्य है। विगत में राज्य में भाजपा की पकड़ मजबूत रही है। यहां पार्टी का मजबूत संगठन मौजूद भी है। बहरहाल, कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व को यह सुनिश्चित करना होगा कि उनका यह दांव शिवकुमार और सिद्धारमैया के नेतृत्व वाले गुटों के बीच मतभेद को बढ़ाने वाला साबित न हो। बल्कि मिल-जुलकर पार्टी संगठन को मजबूती देने के प्रयास हों।

उजाले अपनी यादों के हमारे पास रहने दो...

> अनूठी शैली व मौलिक प्रस्तुति के साथ बशीर बद्र ने सामयिक मुद्दों को भी बेहद नज़ाकत के साथ उठाया। बशीर ने ग़ज़ल को सामंती महफिलों से उठाकर सामान्य अदबी इंसानों के ज़हनों में भी बैठाया है।

हमारे इस कालखंड में जिन बड़े शायरों के कलाम एवं ग़ज़लें, मुहावरों की तरह आम आदमी व 'इलीट-क्लास' की जुबान पर अक्सर सवार रहते हैं, उनमें बशीर बद्र का नाम पहली पंक्ति में बना रहेगा।

वह एक करीबी दोस्त थे, इसलिए निजी सरमाया भी थे, मगर इसके इलावा इनसे अदबी रिश्ता भी था। कालजयी शायरी क्या होती है, इसकी कोई मिसाल देखनी हो तो बशीर की शायरी से गुजर कर देखिए। हर कदम पर उनके 'शेअर' आपका रास्ता रोक लेंगे और मजबूर कर देंगे कि 'वाह? क्या बात है' कहे बिना आगे नहीं जाएंगे।

बशीर की सबसे बड़ी खूबी यह रही है कि अपनी अनूठी शैली, बानगी व मौलिक प्रस्तुति के साथ उसने सामयिक मुद्दों को भी बेहद नज़ाकत के साथ उठाया है।

नगरीय एवं कस्बई हिंसा पर उनका यह तंज अब भी जिक्र में बना हुआ है—'लोग टूट जाते हैं, एक घर बनाने में/तुम रहम नहीं खाते, बस्तियां जलाने में।' 'जिंदगी की शाम' वाला उनका शे'र विदायगी के हर मौके पर गूंजता है—'उजाले अपनी यादों के/हमारे पास रहने दो/न जाने किस गली में जिंदगी की शाम हो जाए।' जिन दो शायरों का प्रयोग कमोबेश हर राजनीतिज्ञ ने भी किया है, उनमें दुष्यंत के इलावा दूसरा नाम बशीर बद्र का है।

91 की उम्र में वह चले गए। सुना था 'डिमेंशिया' सरीखी बीमारियों से पीडित लोग लम्बी उम्र तक बने रहते हैं। इन दिनों वह 'हल्का-हल्का' बहाल भी होने लगे थे, मगर उस तरह चलने की मशक्कत करने ही लगे थे कि बीच सफर में ही लौट गए। इस बार का लौटना अंतिम था और आज वे शारीरिक तौर पर हमारे बीच नहीं हैं। उर्दू का महान शायर बशीर बद्र इन दिनों अस्वस्थ चल रहा है। मेरे ज़ेहन में वे पुराने दिन उदास बदलों की तरह जिंद़गी की उमस से जूझने लगते हैं, जब एक प्यारे अज़ीज़ दोस्त के रूप में वह पुश्तैनी शहर

अबोहर आए थे। हम दो दिन उस शहर में एक नहर के किनारे घूमते रहे थे। मैं, मेरे दोस्त एवं उर्दू अदीब मोहनलाल, वहां के बोहिमियन्ज़ क्लब के सूत्रधार प्रो. सत्य प्रकाश, युवा पत्रकार साथी राजसदोष और साथ में बशीर बद्र। हम लोगों ने तय किया कि बशीर के क़लाम से हिंदी में उर्दू शायरी को जज़्ब करने वाली नई पीढ़ी को रूबरू कराया जाए। मोहन लाल उर्दू व पंजाबी के कहानीकार एवं उपन्यासकार थे। उनके मशविरे व पहलकदमी से शब्दलोक प्रकाशन का 'बैनर' बुना गया जिसके तले उर्दू शायरी के दो 'मजमूओं' (संकलनों) के हिंदी में प्रकाशन की योजना बनी थी। बशीर बद्र ने अपने मजमूए का नाम 'तुम्हारे लिए' तय किया, जबकि दूसरे शायर प्रो. आज़ाद गुलाटी ने 'नई ग़ज़लें' की पांडुलिपि सौंप दी। ये किस्सा करीब 45 बरस पुराना है। तब 1100 प्रतियां छापना ज़ोखिम भरा प्रयास था। मगर सभी प्रतियां 6 माह में खप गईं। खरीददार कमोबेश सभी युवा चेहरे थे।

उन्हीं दिनों पत्रकार व अदीब निरुपमा दत्त ने इंडियन एक्सप्रेस में इस कृति पर एक समीक्षात्मक लेख लिखा था, 'जैसे ही आधुनिक उर्दू ग़ज़ल की बात चलती है तो एकदम ज़ेहन में बशीर बद्र का ख्य़ाल आता है। बशीर बद्र एक ऐसे शायर हैं जिन्होंने ग़ज़ल की नफ़ासत और नज़ाकत को समझते हुए नए-नए प्रयोग किए हैं। वे इस विधा को बदलते हुए युग के साथ जोड़ने में बखूबी सफल रहे हैं। अपनी लचीली आवाज़ में जब वह मंच पर 'शे'र' पेश करते हैं तो हर बार मुशायरा लूट ले जाते हैं।

मुझे याद है अम्बाला व गुरुग्राम के वे मुशायरे जिनमें ज़्यादातर शायर यही आग्रह करते थे कि उन्हें बशीर से पहले पढ़ा दिया जाए क्योंकि एक बार बशीर शुरू हुए तो फिर श्रोता उन्हीं के नाम को आगे बढ़ाते रहने की जिद्द करेंगे। इसी वर्ष 17 फ़रवरी को मध्यप्रदेश के राज्यपाल लाल जी टंडन जो कि बशीर साहब के प्रशंसक भी रहे थे, उनके 85वें जन्म दिन पर उनके आवास पर गए और उन्हें एक भव्य गुलदस्ता व शॉल आदि उपहार सौंपे। बशीर साहब की बेग़म राहत बद्र ने अर्द्धचेतनावस्था में बिस्तर में ही बशीर साहब को लखनऊ से लाल जी टंडन के मुबारिकबाद देने को आने की बात बताई।

बशीर बद्र किसी खेमे का नाम नहीं! बशीर बद्र किसी एक वैचारिक प्रतिबद्धता का नाम नहीं! बशीर बद्र ग़ालिब-मीर का, मोमिन का लकीरी वारिस नहीं- लेकिन इन सब बातों के बावजूद उसके प्रशंसक, उन्माद की हद तक उसके ही हैं।

बशीर बद्र की सबसे बड़ी विशेषता उसकी विविधता है। बशीर ने जहां महानगरीय सभ्यता की विद्रूपता पर गहरी मार की है, वहां उसने कस्बई संस्कृति की संवेदना का मुखर रूप देने में भी उतनी ही सफलता प्राप्त की है। उसकी क़लम एक तरफ़ सावधान करती है कि—कोई हाथ भी न मिलाएगा जो गले मिलोगे तपाक से/ये नए मिज़ाज का शहर है ज़रा फ़ासले से मिला करो। वहीं इस बात पर संतोष भी व्यक्त करती है कि-कदीम कस्बों में कैसा सकून होता है/थके थकाए हमारे बुजुर्ग सोते हैं। शैली की ताज़गी, नए मुहावरे का प्रयोग व पुराने मुहावरों को नये अर्थ देना बशीर की एक और विशिष्टता है। बशीर ने ग़ज़ल को सामंती महफिलों से उठाकर केवल कॉफी-हाउसों तक ही नहीं पहुंचाया बल्कि सामान्य अदबी इन्सानों के ज़हनों में भी बैठाया है। अक्सर ग़ज़लों में मतला कमजोर पड़ जाता है। लेकिन बशीर बद्र की लगभग सभी ग़ज़लों का मतला अनुभूति की तीव्रता लिए हुए है। जैसे—'होंटों पे मुहब्बत के फसाने नहीं आते/साहिल पे समन्दर के ख़जाने नहीं आते।' विषयों की विविधता, सही शब्दों का चयन, हर शेर में एक पूरा अफसाना कह डालने की तीव्र ईमानदारी और संवेदना के धरातल पर इन्सान के हर लम्हे के साथ जुड़ पाने की क्षमता भी उनकी शायरी में है। जदीद गज़ल को जो ख़ूबसूरत पहरावा बशीर बद्र ने दिया है, वह शायद ही अब तक किसी दूसरे शायर ने दिया हो। यदि अतिशयोक्ति न समझा जाए तो गज़ल के इस युग को बड़ी आसानी व दलील के साथ बशीर बद्र-युग कहा जा सकता है।

प्रेरणा

प्रेम का वह आलिंगन: जब श्रीराम ने हनुमान को अपना सर्वस्व दे दिया

लंका की अशोक वाटिका में माता सीता से मिलकर जब पवनपुत्र हनुमान लौटे, तब उनके हृदय में केवल एक ही भावना थी—अपने प्रभु श्रीराम को माता सीता का संदेश पहुँचाना। समुद्र लांघकर, राक्षसों का सामना करके, लंका को जलाकर और अनगिनत संकटों को पार करके भी हनुमान के मन में अपने पराक्रम का तनिक भी अभिमान नहीं था। उनके भीतर केवल अपने आराध्य के प्रति समर्पण की मधुर धारा बह रही थी। जब वे श्रीराम के सामने पहुँचे, तब उनके नेत्रों में आनंद और करुणा दोनों एक साथ झलक रहे थे। उन्होंने अत्यंत विनम्रता से माता सीता द्वारा दी गई चूड़ामणि श्रीराम के हाथों में सौंप दी।

जैसे ही श्रीराम ने उस चूड़ामणि को अपने हाथों में लिया, उनका हृदय भावनाओं के अथाह सागर में डूब गया। कुछ क्षणों तक वे उसे देख भी नहीं पाए। उनकी आँखें भर आईं और मन स्मृतियों के उन गलियारों में चला गया, जहाँ मिथिला का वह पावन विवाह मंडप सजा था। उन्हें याद आया कि कैसे जनकपुरी में माता सीता ने स्वयंवर में उन्हें अपना पति स्वीकार किया था। वह चूड़ामणि केवल एक आभूषण नहीं थी, बल्कि उनके प्रेम, विश्वास और वैवाहिक बंधन का जीवंत प्रतीक थी। उसे देखते ही श्रीराम के भीतर सीता के वियोग की पीड़ा और अधिक गहरी हो उठी।

उनके सामने सीता का करुण चेहरा घूमने लगा—अशोक वाटिका में एक वृक्ष के नीचे बैठी हुई, रावण की धमकियों के बीच भी अपने राम के नाम का स्मरण करती हुई। श्रीराम का मन व्याकुल हो उठा। वे समझ गए कि उनकी प्रिय सीता कितने कष्टों में हैं। उसी क्षण उन्होंने हनुमान की ओर देखा। वह वानर रूप में खड़ा सेवक वास्तव में भक्ति, समर्पण और प्रेम का साक्षात स्वरूप था। जिसने बिना किसी स्वार्थ के, बिना किसी भय के, अपने प्रभु के लिए असंभव को संभव कर दिखाया। श्रीराम का हृदय कृतज्ञता से भर उठा। संसार में जब कोई व्यक्ति किसी के लिए बड़ा कार्य करता है, तो बदले में उसे धन, पद, सम्मान या कोई वस्तु दी जाती है। परंतु हनुमान ने जो किया था, उसके सामने संसार का हर उपहार छोटा पड़ गया। श्रीराम सोचने लगे कि वे हनुमान को क्या दें। उनके पास सम्पूर्ण अयोध्या का वैभव था, समस्त पृथ्वी का राज्य था, परंतु उस क्षण उन्हें लगा कि यह सब हनुमान की सेवा के सामने तुच्छ है।

यह केवल एक कार्य नहीं था, यह प्रेम की चरम अभिव्यक्ति थी। हनुमान ने अपने प्राणों की परवाह किए बिना सीता की खोज की। उन्होंने अपने बल और बुद्धि का उपयोग केवल अपने प्रभु की प्रसन्नता के लिए किया। उनमें अहंकार का नाम तक नहीं था। वे स्वयं को केवल "रामदूत" कहते थे। ऐसे निष्काम सेवक को भला कौन-सा उपहार दिया जा सकता था?

तभी श्रीराम उठे। उनकी आँखों में प्रेम के आँसू थे। उन्होंने हनुमान को अपने समीप बुलाया और अत्यंत भावुक स्वर में कहा—"हे हनुमान! तुमने मेरे लिए जो किया है, उसका प्रतिदान मैं कभी नहीं दे सकता। इस पूरे ब्रह्माण्ड में ऐसा कोई उपहार नहीं है, जो तुम्हारी सेवा के बराबर हो। इसलिए मैं तुम्हें अपना सर्वस्व देता हूँ।" इतना कहकर श्रीराम ने हनुमान को अपने हृदय से लगा लिया।

वह केवल एक आलिंगन नहीं था। वह परमात्मा और भक्त का दिव्य मिलन था। जैसे ही हनुमान श्रीराम के आलिंगन में समाए, उनके भीतर प्रेम और ऊर्जा की अनंत धाराएँ प्रवाहित होने लगीं। उन्हें अनुभव हुआ कि उनका अस्तित्व समाप्त हो रहा है और वे स्वयं राम में विलीन होते जा रहे हैं। उस क्षण भक्त और भगवान के बीच कोई भेद नहीं रह गया था। हनुमान को लगा कि वे स्वयं राम हो गए हैं। उनका मन, प्राण और चेतना सब कुछ राममय हो उठा।

भक्ति की यही सबसे ऊँची अवस्था है। जब भक्त अपने अहंकार को पूरी तरह मिटा देता है, तब भगवान उसे अपने समान बना लेते हैं। हनुमान की सबसे बड़ी विशेषता यही थी कि उन्होंने कभी अपने बल का गर्व नहीं किया। वे जानते थे कि उनकी सारी शक्ति केवल राम की कृपा से है। इसी कारण वे राम के सबसे प्रिय बन गए। संसार में ज्ञान, शक्ति और वैभव से भी अधिक मूल्यवान यदि कुछ है, तो वह है निष्काम प्रेम और सेवा।

यह प्रसंग हमें यह भी सिखाता है कि सच्चा प्रेम कभी प्रतिफल की अपेक्षा नहीं करता। हनुमान ने सीता की खोज इसलिए नहीं की कि उन्हें कोई पुरस्कार मिलेगा। उन्होंने यह कार्य केवल इसलिए किया क्योंकि उनके प्रभु दुःखी थे। जब प्रेम में स्वार्थ समाप्त हो जाता है, तभी वह भक्ति बनता है। और जब भक्ति पूर्ण हो जाती है, तब भगवान स्वयं भक्त के सामने नतमस्तक हो जाते हैं।

श्रीराम का वह आलिंगन आज भी भारतीय संस्कृति में भक्ति का सर्वोच्च प्रतीक माना जाता है। यह बताता है कि भगवान को पाने के लिए बड़े यज्ञ, कठिन तप या भारी विद्वता की आवश्यकता नहीं है। यदि हृदय में सच्चा प्रेम, विनम्रता और सेवा की भावना हो, तो भगवान स्वयं भक्त को गले लगा लेते हैं। हनुमान की महिमा इसी में है कि उन्होंने कभी अपने लिए कुछ नहीं माँगा। उन्हें केवल राम के चरणों में स्थान चाहिए था।

जब भी कोई भक्त इस प्रसंग को पढ़ता है, उसका हृदय भाव-विभोर हो उठता है। यह केवल रामायण की कथा नहीं, बल्कि प्रेम और समर्पण का शाश्वत संदेश है। संसार के सारे संबंध समय के साथ बदल जाते हैं, परंतु भगवान और भक्त का संबंध कभी नहीं बदलता। उसमें न छल होता है, न स्वार्थ, न अपेक्षा। वहाँ केवल प्रेम होता है—निर्मल, निष्कलंक और अनंत।

हनुमान और श्रीराम का यह दिव्य मिलन हमें याद दिलाता है कि ईश्वर तक पहुँचने का सबसे सरल मार्ग प्रेम है। जिस हृदय में सेवा, करुणा और समर्पण का दीपक जलता है, वहाँ स्वयं भगवान निवास करते हैं। और जब भगवान किसी भक्त को अपने हृदय से लगा लेते हैं, तब वह भक्त केवल भक्त नहीं रहता, वह स्वयं दिव्यता का स्वरूप बन जाता है।

हीट वेव की गिरफ्त में भारत तपती धरती, तड़पता जीवन

बदलती जलवायु के कारण भारत सहित दुनिया के अनेक हिस्से भीषण हीट वेव की चपेट में है। अब यह संकट पारंपरिक क्षेत्रों से निकलकर तटीय इलाकों तक फैल चुका है। अंधाधुंध शहरीकरण, घटती हरियाली और कंक्रीट के बढ़ते निर्माण से 'अर्बन हीट आइलैंड' का प्रभाव बढ़ रहा है, जिससे दिन और रातें अत्यधिक गर्म हो रही हैं। राजस्थान के बाड़मेर से लेकर दिल्ली की गलियों और विदर्भ के मैदानों तक पारा 45 डिग्री सेल्सियस के स्तर को पार कर चुका है। यह केवल बढ़ते तापमान का आंकड़ा नहीं है बल्कि यह एक गहराता सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट और आर्थिक चेतावनी है। हीट वेव अब केवल मौसमी असुविधा नहीं बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्था और मानव अस्तित्व के लिए गंभीर संकट बन चुकी है। बढ़ते तापमान, घटती हरियाली और कंक्रीट के फैलते जंगलों ने जीवन को लू की लपटों में समेट दिया है। मौसम विभाग और पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के ताजा आंकड़ों ने एक डरावनी तस्वीर पेश की है। पिछले चार दशकों में हीट वेव (लू) से होने वाली मौतों में 62 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। गौर करने वाली बात यह है कि हीट वेव अब केवल अपने पारंपरिक गढ़ (उत्तर-पश्चिम और मध्य भारत) तक सीमित नहीं रही बल्कि इसने दक्षिण भारत के उन तटीय इलाकों को भी अपनी चपेट में ले लिया है, जो ऐतिहासिक रूप से कम ताप प्रभावित रहते थे। अध्ययन बताते हैं कि 1981 से 2000 के बीच लू की औसत अवधि जहां 2.5 से 5.5 दिन थी, वहीं 2001 से 2020 के बीच यह बढ़कर 8.5 दिन तक पहुंच गई। लू का भौगोलिक दायरा भी 11.9 लाख वर्ग किलोमीटर से फैलकर 18.1 लाख वर्ग किलोमीटर हो चुका है। यह विस्तार बताता है कि जलवायु परिवर्तन अब भविष्य की आशंका नहीं, वर्तमान की कड़वी हकीकत है। हमारे शहर कंक्रीट के जंगलों में तब्दील हो चुके हैं, जो दिनभर गर्मी सोखते हैं और रात में उसे मुक्त करते हैं, जिससे 'अर्बन हीट आइलैंड' का प्रभाव पैदा होता है। इस तपती आग में सबसे अधिक जोखिम उन लोगों (रेहड़ी-पटरी वाले, निर्माण श्रमिक और दिहाड़ी मजदूर) का है, जो खुले आसमान के नीचे अपना वजूद तलाशते हैं। इनके पास न तो कूलिंग सेंटर की सुविधा है और न ही काम के घंटों में लचीलापन। इसके साथ ही बच्चे और बुजुर्ग इस बढ़ते 'डिस्कंफर्ट इंडेक्स' के सबसे आसान शिकार बन रहे हैं।

वैज्ञानिकों के मुताबिक तापमान में वृद्धि से आगामी वर्षों में हीट वेव, गर्मी का मौसम ज्यादा समय तक रहने और सर्दी के मौसम का समय घटने जैसी स्थितियां पैदा होंगी। इस बारे में वैज्ञानिकों का स्पष्ट कहना है कि जिस जलवायु परिवर्तन के बारे में अब तक हम केवल पढ़ते-सुनते रहे थे, वह अब हमारे सामने आकर खड़ा हो गया है। भारत में मई का महीना गर्म हवाओं (लू) का चरम समय होता है और लू की घटनाओं को भी मौसम में दिन-प्रतिदिन बदलाव का स्वाभाविक हिस्सा माना जाता है लेकिन चिंता की बात यही है कि लू की तीव्रता लगातार वर्ष दर वर्ष बढ़ रही है। पिछले करीब डेढ़ दशकों में 2009, 2010, 2016, 2017 और 2022 भारत में रिकॉर्ड किए गए पांच सबसे गर्म वर्ष रहे। आईएमडी के मुताबिक 15 सबसे गर्म वर्षों में से 11 वर्ष 2008 से 2022 के बीच ही दर्ज किए गए। यह जानना भी जरूरी कि हीट वेव आखिर है क्या? जैसा कि नाम से ही जाहिर है, हीट वेव अत्यधिक गर्म मौसम की अवधि है, जो प्रायः दो या ज्यादा दिनों तक रहती है। जब तापमान किसी क्षेत्र के सामान्य औसत तापमान से अधिक हो जाता है तो उसे 'हीट वेव' कहा जाता हं। आईएमडी के अनुसार मैदानी इलाकों का अधिकतम तापमान जब 40 डिग्री सेल्सियस तक और पहाड़ी क्षेत्रों का तापमान 30 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है तो लू चलने लगती है और यदि तापमान 47 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है तो यह खतरनाक लू की श्रेणी में कही जाती है। इसी प्रकार तटीय क्षेत्रों में जब तापमान 37 डिग्री सेल्सियस हो जाता है तो लू चलने लगती है। हीट वेव के कारण लोगों के बीमार होने और हीट स्ट्रोक का खतरा बहुत बढ़ जाता है तथा सैंकड़ों लोगों की मौत हो जाती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 1998 से 2017 के बीच हीट वेव के कारण 1.66 लाख से ज्यादा लोगों की मौत हुई थी और यह आंकड़ा अब वर्ष दर वर्ष तेजी से बढ़ रहा है।

आईआईटी खड़गपुर के एक अध्ययन से यह स्पष्ट हो चुका है कि तापमान में वृद्धि तथा लू का मानव शरीर पर व्यापक असर पड़ रहा है। गर्म हवाओं से ब्रेन स्ट्रोक, हृदयाघात, नसों में खून के थक्के जमने की आशंका, स्थायी विकलांगता का खतरा बढ़ जाता है और इससे मृत्यु दर में भी वृद्धि हो सकती है। विशेषज्ञों के अनुसार, हीट वेव बाढ़ के बाद दूसरी सबसे घातक आपदा है, जो मानव स्वास्थ्य के लिए गंभीर चुनौतियां पेश कर रही है। लू का असर हृदय तथा फेफड़े जैसे अंगों पर सर्वाधिक पड़ता है, जो बेहद खतरनाक हो सकता है। हीट वेव से ऐसे लोगों की स्थिति और खराब होने की संभावना होती है, जो हृदय रोग, मधुमेह, उच्च रक्तचाप, गुर्दे की बीमारी इत्यादि समस्याओं से पीड़ित हैं। आईएमडी के मुताबिक वैसे तो हर साल दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, गुजरात, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना इत्यादि उत्तर पश्चिमी भारत, मध्य, पूर्व और उत्तर प्रायद्वीपीय भारत के मैदानी इलाकों में मार्च से जून के दौरान हीट वेव का दौर चलता है लेकिन जैसे-जैसे पृथ्वी की जलवायु गर्म होती जा रही है, दिन और रात भी सामान्य से अधिक गर्म होते जा रहे हैं, जिससे हीट वेव की घटनाएं बढ़ रही हैं और मौतों तथा बीमारियों की आशंका भी बढ़ रही है।

अभियान

मां गंगा का अवतरण: आस्था, संस्कृति और प्रकृति संरक्षण का सनातन संदेश

भारत की सांस्कृतिक चेतना में यदि किसी नदी को केवल जलधारा नहीं, बल्कि मां का दर्जा प्राप्त हुआ है, तो वह गंगा है। हिमालय से निकलकर हजारों किलोमीटर की यात्रा करने वाली गंगा केवल करोड़ों लोगों की प्यास बुझाने वाली नदी नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता की आत्मा मानी जाती है। भारतीय जनमानस में गंगा के प्रति जो श्रद्धा दिखाई देती है, वह केवल धार्मिक आस्था का परिणाम नहीं है, बल्कि प्रकृति के प्रति सम्मान, जीवन के प्रति कृतज्ञता और आध्यात्मिक चेतना का प्रतीक भी है। इसी कारण गंगा दशहरा का पर्व भारतीय संस्कृति में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। यह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि भारतीय लोकजीवन की गहराइयों में प्रवाहित होने वाली उस भावना का उत्सव है, जिसमें प्रकृति और मानव जीवन के बीच दिव्य संबंध स्थापित होता है।

गंगा दशहरा ज्येष्ठ शुक्ल दशमी के दिन मनाया जाता है। मान्यता है कि इसी दिन मां गंगा स्वर्ग से पृथ्वी पर अवतरित हुई थीं। यह पर्व गंगा के धरती पर आने की उस ऐतिहासिक और पौराणिक घटना की स्मृति में मनाया जाता है, जिसने मानव जीवन को पवित्रता, मुक्ति और जीवनदायिनी शक्ति का संदेश दिया। हिंदू पंचांग के अनुसार इस वर्ष गंगा दशहरा की तिथि 25 मई को प्रातः 4:30 बजे से आरंभ होकर 26 मई को प्रातः 5:10 बजे तक रहेगी। उदया तिथि के कारण यह पर्व 25 मई को मनाया जाएगा। इस दिन गंगा स्नान, दान-पुण्य, जप, तप, शिव पूजा और दीपदान का विशेष महत्व माना जाता है। विशेष रूप से इस बार यह पर्व सोमवार को पड़ रहा है, जो भगवान शिव की आराधना के लिए अत्यंत शुभ माना जाता है। चूंकि गंगा भगवान शिव की जटाओं से होकर पृथ्वी पर अवतरित हुई थीं, इसलिए इस दिन शिव पूजा का महत्व और अधिक बढ़ जाता है।

गंगा अवतरण की कथा भारतीय पुराणों में अत्यंत भावपूर्ण रूप में वर्णित है। कहा जाता है कि सूर्यवंशी राजा सगर ने अश्वमेध यज्ञ किया था। यज्ञ का घोड़ा देवराज इंद्र ने चोरी करके कपिल मुनि के आश्रम के निकट बांध दिया। राजा सगर के साठ हजार पुत्र घोड़े की खोज करते हुए वहां पहुंचे और उन्होंने कपिल मुनि पर आरोप लगा दिया। मुनि के क्रोध से वे सभी भस्म हो गए। उनकी आत्माओं की मुक्ति संभव नहीं हो पा रही थी। कई पीढ़ियों बाद राजा भगीरथ ने अपने पूर्वजों के उद्धार के लिए कठोर तपस्या की। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर मां गंगा पृथ्वी पर आने को तैयार हुईं, लेकिन उनका वेग इतना प्रचंड था कि पृथ्वी उसे सहन नहीं कर सकती थी। तब भगीरथ ने भगवान शिव की आराधना की। शिव ने अपनी जटाओं में गंगा को धारण कर उनके वेग को नियंत्रित किया और धीरे-धीरे पृथ्वी पर प्रवाहित किया। यही दिव्य घटना गंगा अवतरण कहलाती है।

यह कथा केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि त्याग, धैर्य और लोककल्याण की महान भावना को भी व्यक्त करती है। राजा भगीरथ ने केवल अपने परिवार के लिए नहीं, बल्कि समस्त मानवता के कल्याण के लिए तपस्या की थी। उन्होंने यह सिद्ध किया कि सच्चा प्रयास वही है, जो दूसरों के हित के लिए किया जाए। आज भी जब कोई कठिन कार्य अथक परिश्रम से पूरा किया जाता है, तो उसे "भगीरथ प्रयास" कहा जाता है। यह भारतीय संस्कृति में त्याग और समर्पण के महत्व को दर्शाता है।

गंगा दशहरा को "दस पापों का नाश करने वाला पर्व" भी कहा जाता है। 'दश' अर्थात दस और 'हरा' अर्थात नाश करने वाली। धार्मिक मान्यता है कि इस दिन गंगा स्नान करने से मनुष्य के दस प्रकार के पाप समाप्त हो जाते हैं। इसी कारण देशभर से लाखों श्रद्धालु गंगा घाटों पर पहुंचते हैं और श्रद्धा भाव से स्नान कर मां गंगा का पूजन करते हैं। हरिद्वार, ऋषिकेश, प्रयागराज, वाराणसी, काशी और गंगासागर जैसे तीर्थस्थलों पर इस अवसर पर विशेष उत्सव का वातावरण दिखाई देता है। घाटों पर दीपों की पंक्तियां सजती हैं, गंगा आरती की दिव्य ध्वनि गूंजती है और श्रद्धालु भक्ति में डूबकर मां गंगा से सुख, शांति और मोक्ष की कामना करते हैं।

भारतीय परंपरा में गंगा जल को अत्यंत पवित्र माना गया है। जन्म से लेकर मृत्यु तक लगभग हर संस्कार में गंगा जल का प्रयोग किया जाता है। गृह प्रवेश, विवाह, यज्ञ, पूजा और अंतिम संस्कार जैसे सभी धार्मिक कार्यों में गंगा जल को शुद्धता और शुभता का प्रतीक माना जाता है। यह विश्वास केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक चेतना का हिस्सा बन चुका है। गांवों में आज भी लोग गंगा जल हाथ में लेकर सत्य बोलने की शपथ लेते हैं। ऐसा माना जाता है कि गंगा जल हाथ में लेकर कोई व्यक्ति असत्य नहीं बोल सकता। यह गंगा के प्रति भारतीय समाज की गहरी श्रद्धा को दर्शाता है। भारतीय साहित्य, संगीत और कला में भी गंगा का विशेष स्थान है। संत कबीर, तुलसीदास, सूरदास और अन्य महान कवियों ने अपनी रचनाओं में गंगा की महिमा का वर्णन किया है। गंगा को केवल नदी नहीं, बल्कि मोक्षदायिनी मां के रूप में चित्रित किया गया है। लोकगीतों और भजनों में गंगा के प्रति प्रेम और श्रद्धा की भावना स्पष्ट दिखाई देती है। भारतीय चित्रकला और मूर्तिकला में भी गंगा का दिव्य स्वरूप अंकित किया गया है। यह दर्शाता है कि गंगा भारतीय संस्कृति की आत्मा में रची-बसी हुई हैं।

गंगा दशहरा का पर्व भारतीय लोकजीवन में उत्साह और उल्लास का वातावरण लेकर आता है। विभिन्न स्थानों पर मेले लगते हैं, भजन-कीर्तन होते हैं, कथा और सत्संग आयोजित किए जाते हैं। लोग परिवार सहित गंगा तटों पर पहुंचकर पूजा करते हैं और सामाजिक मेलजोल का आनंद लेते हैं। यह पर्व केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक एकता का भी प्रतीक है। इसमें हर वर्ग और हर आयु के लोग भाग लेते हैं। गंगा तटों पर होने वाली आरती और दीपदान का दृश्य अत्यंत मनोहारी होता है, जो लोगों के मन में आध्यात्मिक शांति का अनुभव कराता है।

आधुनिक समय में गंगा दशहरा का महत्व और भी बढ़ गया है, क्योंकि यह पर्व पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी देता है। जिस गंगा को हम मां कहकर पूजते हैं, वही आज प्रदूषण, प्लास्टिक, सीवेज और औद्योगिक कचरे की समस्या से जूझ रही है। तेजी से बढ़ते शहरीकरण और औद्योगिकीकरण ने गंगा की पवित्रता और स्वच्छता को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। अनेक स्थानों पर गंगा का जल प्रदूषित हो चुका है, जिससे मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण दोनों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। ऐसे में गंगा दशहरा केवल पूजा और स्नान का पर्व बनकर नहीं रह जाना चाहिए, बल्कि यह संकल्प लेने का दिन भी होना चाहिए कि हम अपनी नदियों को स्वच्छ और निर्मल बनाए रखने के लिए सक्रिय प्रयास करेंगे।

पिछले कुछ वर्षों में सरकार, सामाजिक संगठनों और आम नागरिकों द्वारा गंगा स्वच्छता अभियान चलाए जा रहे हैं। गंगा तटों की सफाई, प्लास्टिक मुक्त अभियान, वृक्षारोपण और जल संरक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों में जागरूकता फैलाने का प्रयास किया जा रहा है। गंगा दशहरा के अवसर पर अनेक स्वयंसेवी संस्थाएं घाटों की सफाई अभियान चलाती हैं और लोगों को पर्यावरण संरक्षण का संदेश देती हैं। यह पहल इस बात का प्रमाण है कि अब समाज केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि पर्यावरणीय दृष्टिकोण से भी गंगा के महत्व को समझने लगा है। आज की भागदौड़ भरी आधुनिक जीवनशैली में गंगा दशहरा जैसे पर्व मानसिक शांति और आध्यात्मिक संतुलन प्रदान करते हैं। भौतिक सुख-सुविधाओं की अंधी दौड़ में मनुष्य अपनी सांस्कृतिक जड़ों और प्रकृति से दूर होता जा रहा है। ऐसे समय में यह पर्व हमें याद दिलाता है कि जीवन केवल धन और उपलब्धियों तक सीमित नहीं है। प्रकृति के प्रति सम्मान, आध्यात्मिक चेतना और सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण भी उतना ही आवश्यक है। गंगा का शांत और निरंतर प्रवाह हमें जीवन में धैर्य, सहनशीलता और सेवा का संदेश देता है।

PRGI NO. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HARDIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

कॉफी के कप में तैरता मिला कॉकरोच अहमदाबाद के चर्चित कैफे पर उठे गंभीर सवाल

अहमदाबाद के एक नामचीन कैफे में परोसी गई कॉफी से कॉकरोच निकलने की घटना ने शहर में खाद्य सुरक्षा और स्वच्छता व्यवस्था को लेकर नई बहस छेड़ दी है। जिस स्थान पर लोग आरामदायक माहौल, बेहतर सेवा और गुणवत्तापूर्ण भोजन की उम्मीद लेकर पहुंचते हैं, वहीं यदि उन्हें खाने-पीने की वस्तुओं में कीड़े-मकोड़े दिखाई दें तो यह केवल एक ग्राहक की शिकायत नहीं, बल्कि पूरे खाद्य सुरक्षा तंत्र पर गंभीर प्रश्नचिह्न बन जाता है। बोडकदेव क्षेत्र स्थित प्रसिद्ध 'मोचा कैफे' में सामने आई इस घटना ने न केवल ग्राहकों को हैरान किया है, बल्कि नगर प्रशासन और खाद्य सुरक्षा विभाग की कार्यप्रणाली को भी कठघरे में खड़ा कर दिया है।

जानकारी के अनुसार, कैफे में पहुंचे एक ग्राहक ने कॉफी का ऑर्डर दिया था। जब कॉफी उसके टेबल पर पहुंची और उसने कप को ध्यान से देखा तो उसमें एक कॉकरोच तैरता हुआ दिखाई दिया। यह दृश्य देखकर ग्राहक स्तब्ध रह गया। पहले तो उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ, लेकिन जब उसने कप को करीब से देखा तो कॉफी में कीड़ा साफ नजर आया। इसके बाद ग्राहक ने तत्काल कैफे प्रबंधन से शिकायत की और वहां मौजूद कर्मचारियों से जवाब मांगा। देखते ही देखते मामला बढ़ गया और कैफे में मौजूद अन्य ग्राहकों का भी ध्यान इस ओर गया।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार ग्राहक ने केवल कॉफी में कॉकरोच मिलने का ही आरोप नहीं लगाया, बल्कि कैफे की रसोई की स्वच्छता पर भी गंभीर सवाल उठाए। उसका दावा था कि भोजन और पेय पदार्थ तैयार किए जाने वाले क्षेत्र में साफ-सफाई का अभाव था तथा वहां कॉकरोच और अन्य कीट दिखाई दे रहे थे। यदि यह आरोप सही हैं, तो यह स्थिति केवल एक कप कॉफी तक सीमित नहीं बल्कि पूरे प्रतिष्ठान की खाद्य सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर चिंता

पैदा करती है।

घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद मामला और अधिक चर्चा में आ गया। वीडियो सामने आने के बाद बड़ी संख्या में लोगों ने अपनी नाराजगी व्यक्त की। कई लोगों ने सवाल उठाया कि जब शहर के प्रतिष्ठित और महंगे कैफे में इस प्रकार की स्थिति है, तो सामान्य भोजनालयों और छोटे प्रतिष्ठानों की हालत कैसी होगी। सोशल मीडिया पर उपभोक्ताओं ने अहमदाबाद नगर निगम (एएमसी) और खाद्य सुरक्षा विभाग से तत्काल जांच और कड़ी कार्रवाई की मांग की है।

विशेषज्ञों का मानना है कि खाद्य पदार्थों में कीड़े या कॉकरोच का मिलना केवल लापरवाही का मामला नहीं होता, बल्कि यह सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए भी खतरा बन सकता है। कॉकरोच अनेक प्रकार के बैक्टीरिया और संक्रमण फैलाने वाले जीवाणुओं के वाहक माने जाते हैं। यदि वे खाद्य पदार्थों या भोजन तैयार करने वाले स्थानों के संपर्क में आते हैं, तो इससे उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य पर गंभीर असर पड़ सकता है। फूड पॉइजनिंग, पेट संबंधी संक्रमण और अन्य बीमारियों का खतरा भी बढ़ जाता है।

अहमदाबाद में पिछले कुछ महीनों के दौरान भोजन में कीड़े-मकोड़े मिलने की घटनाओं ने पहले ही चिंता बढ़ा रखी है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार बीते सात महीनों में शहर में भोजन और पेय पदार्थों में कीड़े मिलने से संबंधित लगभग 25 शिकायतें दर्ज की जा चुकी हैं। यह संख्या बताती है कि समस्या केवल किसी एक प्रतिष्ठान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यापक स्तर पर खाद्य स्वच्छता से जुड़ी चुनौती का संकेत है।

स्थिति की गंभीरता को देखते हुए अहमदाबाद नगर निगम ने भी हाल के समय में खाद्य प्रतिष्ठानों पर निगरानी बढ़ाई है। अधिकारियों का कहना है कि केवल खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत कार्रवाई पर्याप्त नहीं साबित हो रही थी, इसलिए अब नगर प्रशासन ने जीपीएमसी अधिनियम के प्रावधानों का उपयोग कर अधिक कठोर कदम उठाने की तैयारी की है। इसके तहत स्वच्छता मानकों का उल्लंघन करने वाले प्रतिष्ठानों के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई, लाइसेंस संबंधी कार्रवाई और अन्य प्रशासनिक कदम उठाए जा सकते हैं।

चिंता की बात यह भी है कि स्वच्छता संबंधी शिकायतें अब केवल सड़क किनारे के ठेलों या छोटे भोजनालयों तक सीमित नहीं रह गई हैं। शहर के कई प्रतिष्ठित होटल, रेस्टोरेंट और कैफे भी जांच के दायरे में आ रहे हैं। उपभोक्ता जब किसी प्रीमियम कैफे या रेस्तरां में अधिक कीमत चुकाते हैं, तो उनकी अपेक्षा केवल स्वादिष्ट भोजन तक सीमित नहीं होती। वे साफ-सुथरे वातावरण, उच्च गुणवत्ता और सुरक्षित खाद्य सामग्री की भी उम्मीद करते हैं। ऐसे में इस प्रकार की घटनाएं उपभोक्ताओं के विश्वास को गहरा आघात पहुंचाती हैं।

खाद्य सुरक्षा विशेषज्ञों का कहना है कि होटल और रेस्टोरेंट उद्योग के लिए नियमित कीट नियंत्रण, रसोई की सफाई, खाद्य सामग्री के सुरक्षित भंडारण और कर्मचारियों के प्रशिक्षण जैसी व्यवस्थाएं अनिवार्य होनी चाहिए। यदि इन मानकों का पालन नहीं किया जाता, तो किसी भी समय ऐसी घटनाएं सामने आ सकती हैं जो न केवल ग्राहकों के स्वास्थ्य के लिए जोखिम पैदा करती हैं बल्कि प्रतिष्ठान की साख को भी नुकसान पहुंचाती हैं।

मोचा कैफे में सामने आई यह घटना एक बार फिर इस सवाल को प्रमुखता से सामने लाती है कि क्या शहर के बड़े और प्रतिष्ठित खाद्य प्रतिष्ठान वास्तव में उन मानकों का पालन कर रहे हैं, जिनका दावा वे अपने ग्राहकों से करते हैं। नगर निगम और खाद्य सुरक्षा विभाग की आगामी कार्रवाई पर अब सभी की निगाहें टिकी हैं। यदि जांच में आरोप सही पाए जाते हैं तो यह मामला केवल एक कैफे तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि पूरे खाद्य उद्योग के लिए चेतावनी साबित हो सकता है।

उपभोक्ता संगठनों का कहना है कि खाद्य सुरक्षा से जुड़े मामलों में केवल जुर्माना लगाना पर्याप्त नहीं है। नियमित निरीक्षण, पारदर्शी जांच व्यवस्था और दोषी पाए जाने वाले प्रतिष्ठानों के खिलाफ सख्त कार्रवाई ही ऐसी घटनाओं पर प्रभावी रोक लगा सकती है। अहमदाबाद की यह घटना बताती है कि स्वाद और ब्रांड के आकर्षण के पीछे छिपी वास्तविक स्वच्छता व्यवस्था की लगातार निगरानी कितनी आवश्यक है। आज जब लोग स्वास्थ्य और स्वच्छता को लेकर पहले से अधिक जागरूक हैं, तब खाद्य प्रतिष्ठानों के लिए भी जिम्मेदारी और जवाबदेही का स्तर उतना ही ऊंचा होना चाहिए।

अहमदाबाद मंडल के सी एंड डब्ल्यू (C&W) कर्मचारियों की सूझबूझ और त्वरित कार्रवाई : टला एक्सप्रेस ट्रेन का कोच डिटैचमेंट

मात्र 28 मिनट में क्षतिग्रस्त वाल्व को बदलकर ट्रेन को गंतव्य के लिए किया रवाना,DRM श्री वेद प्रकाश ने रेल कर्मियों को 5,000 के सामूहिक पुरस्कार से नवाजा

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के कैरिज एवं वैगन (सी एंड डब्ल्यू) विभाग के कर्मचारियों ने आज अपनी तकनीकी दक्षता, दूरदर्शी योजना और उत्कृष्ट समन्वय का परिचय देते हुए एक बड़ा संकट टाल दिया। रेल कर्मियों की मुस्तैदी से ट्रेन संख्या 22950 देहरादून–बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस के एक कोच को अलग (डिटैच) होने से बचा लिया गया और ट्रेन का सुचारु व सुरक्षित परिचालन सुनिश्चित किया गया।

क्या थी तकनीकी समस्या?

दिनांक 29 मई 2026 को उत्तर पश्चिम रेलवे क्षेत्राधिकार के अंतर्गत यात्रा के दौरान ट्रेन संख्या 22950 दिल्ली सराय रोहिल्ला-बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस के कोच संख्या M-2 में FIBA (Failure Indication and Brake Application) की स्थिति उत्पन्न हो गई। आबू रोड स्टेशन पर गहन जांच के दौरान तकनीकी टीम ने पाया कि डुप्लेक्स चेक वाल्व क्षतिग्रस्त हो गया था, जिससे लगातार एयर लीकेज हो रही थी। इस लीकेज के कारण अग्रणी ट्रॉली के दोनों एयर स्प्रिंग्स डिफ्लेट (पिचक) गए थे। यात्रियों की सुरक्षा को सर्वोपरि रखते हुए, ट्रेन को सी एंड डब्ल्यू स्टाफ की निगरानी (एस्कॉर्टिंग) में 60 किमी प्रति घंटे की प्रतिबंधित गति से आगे चलाने की अनुमति दी गई।

अहमदाबाद मंडल की तैयारी

प्रातः 06:30 बजे अहमदाबाद कंट्रोल कार्यालय को यह सूचना मिली कि अहमदाबाद स्टेशन पहुंचने पर प्रभावित कोच को ट्रेन से अलग करना पड़ सकता है। कोच डिटैच होने से यात्रियों को भारी असुविधा होती और ट्रेन भी अत्यधिक विलंबित होती।

सूचना मिलते ही अहमदाबाद मंडल के सी एंड डब्ल्यू पर्यवेक्षकों और कर्मचारियों ने तुरंत मोर्चा संभाला। टीम ने बिना समय गंवाए आवश्यक उपकरणों, फिटिंग्स और अतिरिक्त डुप्लेक्स चेक वाल्व की व्यवस्था की और ट्रेन के आने से पहले ही प्लेटफॉर्म संख्या 7 पर पूरी मुस्तैदी के साथ तैनात हो गए।

मात्र 28 मिनट में 'मिशन सफल'

ट्रेन अपने निर्धारित समय से 62 मिनट की देरी से प्रातः 08:27 बजे अहमदाबाद स्टेशन पहुंची। ट्रेन के रुकते ही सी एंड डब्ल्यू की कुशल टीम ने युद्धस्तर पर काम शुरू किया। कर्मचारियों ने अपने तकनीकी कौशल का परिचय देते हुए मात्र 28 मिनट के रिकॉर्ड समय में क्षतिग्रस्त डुप्लेक्स चेक वाल्व को बदल दिया। इसके परिणामस्वरूप कोच को तुरंत फिर से सेवा योग्य (फिट) बना दिया गया। ट्रेन को बिना किसी अतिरिक्त समयहानि के और बिना कोच डिटैच किए सामान्य गति से आगे के गंतव्य के लिए रवाना कर दिया गया।

मंडल रेल प्रबंधक द्वारा सामूहिक पुरस्कार की घोषणा

अहमदाबाद मंडल के रेल कर्मियों की इस समर्पित कार्यशैली और त्वरित निर्णय क्षमता के कारण न केवल एक संभावित कोच डिटैचमेंट टला, बल्कि ट्रेन की समयबद्धता (Punctuality) पर पड़ने वाले असर को भी न्यूनतम रखा जा सका। मंडल रेल प्रबंधक (DRM) अहमदाबाद, श्री वेद प्रकाश ने कर्मचारियों की इस सराहनीय कार्यकुशलता, सतर्कता और तत्परता की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने इस उत्कृष्ट कार्य के लिए संबंधित सी एंड डब्ल्यू टीम को 5,000 का सामूहिक पुरस्कार देने की घोषणा की है।

गांधीग्राम और प्रयागराज के बीच द्वि-साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन का संचालन

यात्रियों की मांग एवं सुविधा को ध्यान में रखते हुए रेलवे द्वारा गांधीग्राम और प्रयागराज के बीच विशेष किराये पर द्वि-साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय लिया गया है। इस विशेष ट्रेन का संचालन निम्नानुसार किया जाएगा।

ट्रेन संख्या 04112/04111 गांधीग्राम–प्रयागराज द्वि-साप्ताहिक स्पेशल (28 फेरे)

ट्रेन संख्या 04112 गांधीग्राम – प्रयागराज द्वि-साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन 31 मई, 2026 से 15 जुलाई, 2026 तक प्रत्येक रविवार और बुधवार को गांधीग्राम से 17:20 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 20:00 बजे प्रयागराज पहुंचेगी। इसी तरह ट्रेन संख्या 04111 प्रयागराज–गांधीग्राम द्वि-साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन 30 मई, 2026 से 14 जुलाई, 2026 तक प्रत्येक शनिवार और मंगलवार को प्रयागराज से 16:15 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 15:30 बजे गांधीग्राम पहुंचेगी।

मार्ग में दोनों दिशाओं में यह ट्रेन चांदखेड़ा रोड, महेसाणा, पालनपुर, आबू रोड, सुमेरपुर जवाई बाँध, फालना, मारवाड़ जंक्शन, ब्यावर, अजमेर, किशनगढ़, जयपुर, गांधीनगर जयपुर, बांदीकुई, भरतपुर, ईदगाह, टूण्डला, इटावा, गोविंदपुरी एवं फतेहपुर स्टेशनों पर ठहरेगी।

इस ट्रेन में द्वितीय सामान्य श्रेणी, स्लीपर एवं एसी-3 टियर श्रेणी के कोच रहेंगे।

ट्रेन संख्या 04112 की बुकिंग 30 मई, 2026 से सभी यात्री आरक्षण केन्द्रों तथा IRCTC की वेबसाइट पर प्रारंभ होगी। यात्रियों से अनुरोध है कि ट्रेन के समय, ठहराव एवं संरचना संबंधी विस्तृत जानकारी के लिए वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in का अवलोकन करें।

31 मई से 15 जुलाई तक प्रत्येक रविवार और बुधवार को गांधीग्राम – प्रयागराज जंक्शन के बीच चलेगी द्वि-साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन

यात्रियों की मांग एवं सुविधा को ध्यान में रखते हुए पश्चिम रेलवे द्वारा भावनगर मंडल से एक महत्वपूर्ण अतिरिक्त रेल सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। गांधीग्राम और प्रयागराज जंक्शन के बीच विशेष किराये पर द्वि-साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय लिया गया है। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, भावनगर मंडल श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार, इस विशेष ट्रेन का संचालन निम्नानुसार किया जाएगा—

ट्रेन संख्या 04112 गांधीग्राम – प्रयागराज जंक्शन द्वि-साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन 31 मई, 2026 से 15 जुलाई, 2026 तक प्रत्येक रविवार और बुधवार को गांधीग्राम से शाम 17:20 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन रात्रि 20:00 बजे प्रयागराज जंक्शन पहुंचेगी।

ट्रेन संख्या 04111 प्रयागराज जंक्शन–गांधीग्राम द्वि-साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन 30 मई, 2026 से 14 जुलाई, 2026 तक प्रत्येक शनिवार और मंगलवार को प्रयागराज जंक्शन से शाम 16:15 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन दोपहर 15:30 बजे गांधीग्राम पहुंचेगी।

दोनों दिशाओं में यह ट्रेन निम्नलिखित स्टेशनों पर ठहरेगी— चांदखेड़ा रोड, मेहसाणा जंक्शन, पालनपुर जंक्शन, आबू रोड, सुमेरपुर जवाई बाँध, फालना, मारवाड़ जंक्शन, ब्यावर, अजमेर जंक्शन, किशनगढ़, जयपुर, गांधीनगर जयपुर, बांदीकुई, भरतपुर, ईदगाह, टूण्डला जंक्शन, इटावा जंक्शन, गोविंदपुरी, फतेहपुर।

इस विशेष ट्रेन में द्वितीय श्रेणी सामान्य (GS), शयनयान (Sleeper) एवं थर्ड एसी (3rd AC) श्रेणी के कोच उपलब्ध रहेंगे।

ट्रेन संख्या 04112 के लिए टिकटों की बुकिंग 30 मई, 2026 (शनिवार) से सभी यात्री आरक्षण केन्द्रों तथा IRCTC की वेबसाइट पर प्रारंभ होगी। यात्रियों से अनुरोध है कि ट्रेन के समय, ठहराव एवं संरचना संबंधी विस्तृत जानकारी के लिए वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in का अवलोकन करें।

पश्चिम रेलवे द्वारा अहमदाबाद और मुंबई के बीच दो जोड़ी स्पेशल ट्रेनों का संचालन

पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की बढ़ती संख्या के मद्देनजर उनकी सुविधा को ध्यान में रखते हुए विशेष किराये पर मुंबई और अहमदाबाद के बीच दो जोड़ी विशेष ट्रेनों का संचालन किया जाएगा।। इन विशेष ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार है:

1. ट्रेन संख्या 09021/09022 मुंबई सेंट्रल–अहमदाबाद–मुंबई सेंट्रल एसी सुपरफास्ट स्पेशल

ट्रेन संख्या 09021 मुंबई सेंट्रल–अहमदाबाद एसी सुपरफास्ट स्पेशल 31 मई, 2026 (रविवार) को मुंबई सेंट्रल से 06:20 बजे प्रस्थान करेगी तथा उसी दिन 12:40 बजे अहमदाबाद पहुंचेगी। इसी तरह ट्रेन संख्या 09022 अहमदाबाद–मुंबई सेंट्रल एसी सुपरफास्ट स्पेशल 31 मई, 2026 (रविवार) को अहमदाबाद से 15:10 बजे प्रस्थान करेगी तथा 21:45 बजे मुंबई सेंट्रल पहुंचेगी।

मार्ग में दोनों दिशाओं में यह ट्रेन बोरीवली, वापी, सूरत, भरूच एवं वडोदरा स्टेशनों पर ठहरेगी। इस ट्रेन में (शताब्दी रेक) एग्जीक्यूटिव चेयरकार, एसी चेयरकार, अनुभूति क्लास कोच और एक विस्टाडोम कोच होंगे।

2. ट्रेन संख्या 09044/09043 अहमदाबाद–बांद्रा टर्मिनस–वटवा सुपरफास्ट स्पेशल

ट्रेन संख्या 09044 अहमदाबाद–बांद्रा टर्मिनस सुपरफास्ट स्पेशल 01 जून, 2026 (सोमवार) को अहमदाबाद से 03:50 बजे प्रस्थान करेगी तथा 12:15 बजे बांद्रा टर्मिनस पहुंचेगी। इसी तरह ट्रेन संख्या 09043 बांद्रा टर्मिनस–वटवा सुपरफास्ट स्पेशल 01 जून, 2026 (सोमवार) को बांद्रा टर्मिनस से 23:45 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन (मंगलवार) को 08:00 बजे वटवा पहुंचेगी।

ट्रेन संख्या 09044 वडोदरा, भरूच, सूरत, वापी, पालघर एवं बोरीवली तथा ट्रेन संख्या 09043 बोरीवली, पालघर, वापी, उधना, वडोदरा, आनंद एवं नडियाद स्टेशनों पर ठहरेगी। इस ट्रेन में एसी-3टियर और स्लीपर श्रेणी के कोच रहेंगे।

ट्रेन संख्या 09021/09022 एवं 09044/09043 की बुकिंग दिनांक 30.05.2026 से सभी पीआरएस काउंटरों तथा IRCTC वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के ठहराव, समय एवं संरचना की विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भावनगर की छमाही बैठक संपन्न

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), भावनगर की छमाही बैठक का आयोजन दिनांक 29 मई, 2026 (शुक्रवार) को मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, भावनगर में अध्यक्ष – नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं मंडल रेल प्रबंधक, भावनगर श्री दिनेश वर्मा की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक किया गया।

बैठक में भावनगर स्थित केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों, बैंकों एवं उपक्रमों के कार्यालय प्रमुखों, राजभाषा अधिकारियों तथा प्रतिनिधियों ने सहभागिता की। बैठक के दौरान सदस्य कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग एवं प्रगति की विस्तृत समीक्षा की गई तथा राजभाषा संबंधी महत्वपूर्ण मदों पर प्रभावी अनुपालन सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए गए।

इस अवसर पर राजभाषा हिंदी पत्रिका प्रकाशन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय को "सर्वश्रेष्ठ शील्ड", सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया को "उत्कृष्ट शील्ड" तथा भारतीय जीवन बीमा निगम (LIC) को "प्रशंसनीय शील्ड" प्रदान कर सम्मानित किया गया। अध्यक्ष महोदय ने सभी विजेता संस्थाओं को बधाई देते हुए कहा कि अन्य कार्यालय भी इनसे प्रेरणा लेकर राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सक्रिय योगदान देंगे।

श्री दिनेश वर्मा ने गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्यों को समयबद्ध रूप से प्राप्त करने पर बल देते हुए सभी कार्यालयों से राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग का आग्रह किया। अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री ऋत्विक शर्मा ने अपने संबोधन में कर्मचारियों को विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं के माध्यम से हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने हेतु प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

बैठक के अंत में सचिव- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति श्री रामप्रीत मौर्य ने अध्यक्ष महोदय सहित सभी सदस्य कार्यालयों एवं प्रतिनिधियों का सक्रिय सहयोग एवं सहभागिता हेतु आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का सफल संचालन वरिष्ठ अनुवादक श्री परेश बी. मजीठिया द्वारा किया गया। बैठक में प्रमुख रूप से मंडल लेखा परीक्षा कार्यालय, इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड, केंद्रीय विद्यालय, आयकर कार्यालय, भारत संचार निगम लिमिटेड (BSNL), मुख्य कारखाना प्रबंधक कार्यालय, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, केंद्रीय नमक एवं समुद्री रसायन अनुसंधान संस्थान, भारतीय जीवन बीमा निगम (LIC), सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया सहित विभिन्न केंद्रीय कार्यालयों एवं उपक्रमों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

शब्दों से नहीं, कार्रवाई से बनेगा भरोसा: अमेरिका को ईरान का स्पष्ट संदेश

तेहरान। पश्चिम एशिया में जारी तनाव और शांति वार्ताओं को लेकर ईरान ने एक बार फिर अमेरिका के प्रति अपना सख्त रुख स्पष्ट कर दिया है। ईरान के मुख्य वार्ताकार और संसद अध्यक्ष मोहम्मद बाघेर गालिबफ ने कहा है कि तेहरान अब किसी भी देश के आश्वासनों, बयानों या कूटनीतिक वादों पर भरोसा करने को तैयार नहीं है। उनके अनुसार, अंतरराष्ट्रीय संबंधों में विश्वास केवल वास्तविक कदमों और ठोस कार्रवाई के आधार पर ही बन सकता है। उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि अमेरिका के शब्दों का नहीं, बल्कि उसके व्यवहार का मूल्यांकन किया जाएगा और जब तक वाशिंगटन अपनी ओर से कोई ठोस पहल नहीं करता, तब तक ईरान भी कोई नया कदम उठाने के पक्ष में नहीं है।

गालिबफ का यह बयान ऐसे समय आया है जब अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने हाल ही में दावा किया था कि संघर्ष विराम को आगे बढ़ाने और व्यापक शांति वार्ता के लिए आवश्यक ढांचे पर महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। अमेरिकी प्रशासन की ओर से

यह संकेत दिया गया था कि दोनों पक्षों के बीच बातचीत के जरिए तनाव कम करने के प्रयास जारी हैं। हालांकि, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की ओर से इस विषय पर कोई सार्वजनिक टिप्पणी नहीं की गई है, जिससे स्थिति को लेकर कई तरह की अटकलें लगाई जा रही हैं।

ईरान का मानना है कि अतीत में कई बार समझौतों और आश्वासनों के बावजूद परिस्थितियां अपेक्षित दिशा में नहीं बढ़ीं। यही कारण है कि तेहरान अब किसी भी नई प्रक्रिया में शामिल होने से पहले व्यावहारिक परिणाम देखना चाहता है। गालिबफ ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर अपने संदेश में कहा कि गारंटी और बयान पर्याप्त नहीं हैं। उनके अनुसार, विश्वास की नींव केवल उन कदमों पर रखी जा सकती है जो वास्तव में जमीन पर दिखाई दें। पिछले महीने पाकिस्तान में आयोजित महत्वपूर्ण वार्ता में ईरानी प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व भी मोहम्मद बाघेर गालिबफ ने ही किया था। इस वार्ता में क्षेत्रीय सुरक्षा, संघर्ष विराम और भविष्य के कूटनीतिक विकल्पों पर चर्चा हुई थी। गालिबफ ने यह भी कहा कि ईरान ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी स्थिति केवल बातचीत के बल पर नहीं बनाई है, बल्कि अपनी सैन्य क्षमता और प्रतिरोधक शक्ति के माध्यम से भी मजबूत की है। उन्होंने संकेत दिया कि देश की रक्षा क्षमता और मिसाइल कार्यक्रम ने ईरान को क्षेत्रीय समीकरणों में प्रभावशाली स्थान दिलाया है। इस बीच शांति प्रयासों में कतर की भूमिका भी लगातार महत्वपूर्ण होती जा रही है। कतर की सरकारी समाचार एजेंसी के अनुसार, अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने हाल ही में कतर के शासक से टेलीफोन पर बातचीत की और क्षेत्र में युद्ध समाप्त करने के प्रयासों पर चर्चा की। कतर लंबे समय से पश्चिम एशिया के कई विवादों में मध्यस्थ की भूमिका निभाता रहा है और वर्तमान परिस्थितियों में भी उसे एक महत्वपूर्ण संवाद सेतु के रूप में देखा जा रहा है। हालांकि शांति प्रयासों के समानांतर तनाव भी कम नहीं हुआ है। अमेरिका और ईरान दोनों ने हाल के दिनों में एक-दूसरे पर संघर्ष विराम के उल्लंघन के आरोप लगाए हैं। इस सप्ताह दक्षिणी ईरान के रणनीतिक महत्व वाले बंदर अब्बास क्षेत्र पर अमेरिकी कार्रवाई के बाद हालात और अधिक संवेदनशील हो गए। इसके जवाब में ईरान ने भी जवाबी सैन्य कार्रवाई की, जिससे क्षेत्र में तनाव बढ़ने की आशंका और गहरा गई। इसी बीच ईरानी सरकारी टेलीविजन ने जानकारी दी कि पिछले 24 घंटों के दौरान 24 जहाजों ने होर्मुज जलडमरूमध्य को सफलतापूर्वक पार किया है। यह मार्ग विश्व व्यापार और ऊर्जा आपूर्ति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। रिपोर्ट के अनुसार, इन जहाजों की आवाजाही ईरानी रिवोल्यूशनरी गार्ड्स और विदेश मंत्रालय के समन्वय से सुनिश्चित की गई। इससे यह संकेत भी मिला कि बढ़ते तनाव के बावजूद ईरान इस रणनीतिक समुद्री मार्ग पर अपना नियंत्रण और निगरानी बनाए हुए है।

पश्चिम रेल्वे द्वारा गांधीग्राम ⇌ प्रयागराज के बीच विशेष ट्रेन चलाई जाएगी

ट्रेन क्र.	प्रस्थान स्टेशन और गंतव्य	सेवा के दिन	प्रस्थान	आगमन
04112	गांधीग्राम - प्रयागराज (द्वि-साप्ताहीक)	31.05.2026 से 15.07.2026 तक	17:20 बजे (रवि और बुध)	20:00 बजे (दूसरे दिन)
04111	प्रयागराज - गांधीग्राम (द्वि-साप्ताहीक)	30.05.2026 से 14.07.2026 तक	16:15 बजे (शनि और मंगल)	15:30 बजे (दूसरे दिन)

होल्ट: चांदखेड़ा रोड, महेसाणा, पालनपुर, आबू रोड, सुमेरपुर, जवाई बांध, फालना, मारवाड़, ब्यावर, अजमेर, किशनगढ़, जयपुर, गांधीनगर जयपुर, बांदीकुई, भरतपुर, ईदगाह आगरा, टूंडला, इटावा, गोविंदपुरी और फतेहपुर स्टेशनों पर दोनों दिशाओं में।

संरचना: AC 3-टियर, स्लीपर क्लास और सामान्य द्वितीय श्रेणी के कोच।

समय, ठहराव और संरचना के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए, यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जा सकते हैं।

ट्रेन संख्या 04112 के लिए बुकिंग ता.30.05.2026 से सभी PRS काउंटरों और IRCTC की वेबसाइट पर शुरू होगी। उपरोक्त ट्रेन स्पेशल ट्रेन के रूप में स्पेशल किराए पर चलेगी।

पश्चिम रेलवे
wr.indianrailways.gov.in
हमें लाइक और फॉलो करें
facebook.com/WesternRly
X.com/WesternRly
Instagram.com/WesternRly
https://www.youtube.com/@WesternRly
https://bit.ly/WesternRailwayOfficial

कृपया सभी आरक्षीत टिकटों के लिए मूल पहचान पत्र साथ रखें ।

सुरक्षित मातृत्व की ओर बढ़ता भारत, अस्पतालों में जन्म लेने वाले नवजातों की संख्या 90 प्रतिशत के पार

नई दिल्ली। भारत में मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की गई है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-6 (एनएफएचएस-6) की ताजा रिपोर्ट के अनुसार देश में संस्थागत प्रसव की दर लगातार बढ़ रही है और अब 90.6 प्रतिशत नवजात अस्पतालों तथा स्वास्थ्य संस्थानों में जन्म ले रहे हैं। यह उपलब्धि केवल एक आंकड़ा नहीं, बल्कि सुरक्षित मातृत्व, बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं और मातृ-शिशु मृत्यु दर में कमी लाने की दिशा में भारत की बड़ी सफलता मानी जा रही है। विशेषज्ञों का मानना है कि संस्थागत प्रसव में हुई यह वृद्धि देश को सार्वभौमिक मातृ स्वास्थ्य कवरेज के लक्ष्य के और करीब ले गई है।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा जारी एनएफएचएस-6 रिपोर्ट में बताया गया है कि वर्ष 2019-21 के दौरान संस्थागत प्रसव की दर 88.6 प्रतिशत थी, जो 2023-24 में बढ़कर 90.6 प्रतिशत हो गई है। इसका अर्थ है कि अब देश की अधिकांश गर्भवती महिलाएं प्रशिक्षित चिकित्सा कर्मियों की निगरानी में अस्पतालों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों और अन्य चिकित्सा संस्थानों में प्रसव करा रही हैं। इससे प्रसव के दौरान होने वाली जटिलताओं से निपटने की क्षमता बढ़ी है और माताओं तथा नवजात शिशुओं की सुरक्षा सुनिश्चित हुई है।

रिपोर्ट में यह भी सामने आया है कि देश में प्रसवपूर्व देखभाल (एंटीनेटल केयर) सेवाओं का दायरा लगातार बढ़ रहा है। वर्ष 2023-24 में 95.9 प्रतिशत गर्भवती महिलाओं को प्रसवपूर्व स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त हुईं। यह संकेत देता है कि गर्भावस्था के दौरान महिलाओं की नियमित स्वास्थ्य जांच, पोषण संबंधी सलाह और चिकित्सकीय निगरानी तक पहुंच में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार गर्भावस्था के शुरुआती महीनों में की गई जांच कई संभावित जोखिमों की पहचान करने और समय रहते उपचार सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। रिपोर्ट के आंकड़े बताते हैं कि पहली तिमाही में प्रसवपूर्व जांच कराने वाली

महिलाओं की संख्या भी बढ़ी है। पहले जहां यह प्रतिशत 70 था, वहीं अब यह बढ़कर 76.2 प्रतिशत हो गया है। इसी प्रकार कम से कम चार बार प्रसवपूर्व जांच कराने वाली महिलाओं का प्रतिशत 58.5 से बढ़कर 65.2 हो गया है। यह बदलाव दर्शाता है कि महिलाएं अब गर्भावस्था को लेकर अधिक जागरूक हो रही हैं और स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ लेने के प्रति सकारात्मक रुख अपना रही हैं।

मातृ स्वास्थ्य के साथ-साथ नवजात शिशुओं की देखभाल के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय सुधार दर्ज किया गया है। रिपोर्ट के अनुसार स्वास्थ्य कर्मियों द्वारा कराए गए प्रसवों का प्रतिशत 89.4 से बढ़कर 91.3 हो गया है। वहीं जन्म के दो दिनों के भीतर डॉक्टर, नर्स, एएनएम या अन्य प्रशिक्षित स्वास्थ्य कर्मियों द्वारा नवजातों की जांच और प्रसवोत्तर देखभाल का प्रतिशत 79.1 से बढ़कर 85.3 हो गया है। यह बदलाव नवजात मृत्यु दर कम करने और शिशुओं को जीवन के शुरुआती दिनों में आवश्यक चिकित्सकीय सहायता उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण माना जा रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि संस्थागत प्रसव का सबसे बड़ा लाभ यह है कि प्रसव के दौरान किसी भी आपात स्थिति में तत्काल चिकित्सा सहायता उपलब्ध हो जाती है। अस्पतालों में प्रशिक्षित डॉक्टरों, नर्सों और आधुनिक उपकरणों की मौजूदगी माताओं और शिशुओं दोनों के लिए जोखिम को काफी हद तक कम कर देती है। यही कारण है कि सरकार पिछले कई वर्षों से जननी सुरक्षा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान और राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन जैसी योजनाओं के माध्यम से संस्थागत प्रसव को बढ़ावा दे रही है।

एनएफएचएस-6 रिपोर्ट में मातृ पोषण के क्षेत्र में भी उत्साहजनक सुधार दर्ज किया गया है। गर्भावस्था के दौरान 100 दिन या उससे अधिक समय तक आयरन और फोलिक एसिड की गोलियां लेने वाली महिलाओं की संख्या 44.1 प्रतिशत से बढ़कर 54.9 प्रतिशत हो गई है। वहीं 180 दिन या उससे अधिक समय तक इन सप्लीमेंट्स का सेवन करने वाली महिलाओं का प्रतिशत 26 से बढ़कर 37.8 हो गया है। चिकित्सकों का मानना है कि आयरन और फोलिक एसिड की पर्याप्त मात्रा एनीमिया को रोकने, मातृ स्वास्थ्य को बेहतर बनाने और नवजात के स्वस्थ विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

रिपोर्ट में बच्चों के स्वास्थ्य से जुड़े कई सकारात्मक संकेतक भी सामने आए हैं। पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों में डायरिया के मामलों में कमी दर्ज की गई है। एनएफएचएस-5 में जहां यह आंकड़ा 0.7 प्रतिशत था, वहीं एनएफएचएस-6 में घटकर 0.5 प्रतिशत रह गया है। इसके पीछे स्वच्छता संबंधी जागरूकता, बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं और टीकाकरण कार्यक्रमों की सफलता को प्रमुख कारण माना जा रहा है। सबसे उल्लेखनीय उपलब्धियों में से एक रोटावायरस वैक्सीन कवरेज में हुई वृद्धि है। 12 से 23 महीने आयु वर्ग के बच्चों में रोटावायरस वैक्सीन की तीनों खुराक प्राप्त करने वालों का प्रतिशत 36.4 से बढ़कर 85.4 हो गया है। यह बढ़ोतरी बच्चों को डायरिया जैसी गंभीर बीमारियों से बचाने की दिशा में एक बड़ी सफलता मानी जा रही है।

रिपोर्ट के अनुसार देश में पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु दर में भी उल्लेखनीय गिरावट आई है। वर्ष 2014 में यह दर प्रति एक हजार जीवित जन्मों पर 45 थी, जो 2024 में घटकर 28 रह गई है। यानी एक दशक में बाल मृत्यु दर में लगभग 38 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है। स्वास्थ्य मंत्रालय ने इस सफलता का श्रेय राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम, डायरिया नियंत्रण अभियान और मातृ-शिशु स्वास्थ्य योजनाओं को दिया है। विशेषज्ञों का मानना है कि भारत में स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार, ग्रामीण क्षेत्रों तक चिकित्सा सुविधाओं की पहुंच बढ़ने, आशा कार्यकर्ताओं और एएनएम के सक्रिय योगदान तथा सरकारी योजनाओं की प्रभावी निगरानी ने इस परिवर्तन को संभव बनाया है। हालांकि अभी भी दूरदराज के क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता, कुपोषण और मातृ स्वास्थ्य से जुड़ी चुनौतियां मौजूद हैं, लेकिन ताजा आंकड़े यह संकेत देते हैं कि देश सही दिशा में आगे बढ़ रहा है।

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-6 की रिपोर्ट यह स्पष्ट करती है कि सुरक्षित मातृत्व और स्वस्थ बचपन की दिशा में भारत ने उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। अस्पतालों में बढ़ते प्रसव, बेहतर प्रसवपूर्व देखभाल, पोषण कार्यक्रमों का विस्तार और शिशु मृत्यु दर में कमी यह दर्शाती है कि स्वास्थ्य क्षेत्र में किए गए निवेश और नीतिगत प्रयासों का सकारात्मक परिणाम सामने आ रहा है। आने वाले वर्षों में यदि यही गति बनी रहती है तो भारत मातृ और शिशु स्वास्थ्य के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर एक महत्वपूर्ण उदाहरण बन सकता है।

गिर के शेरों पर मंडराया संकट, रहस्यमयी मौतों से वन विभाग सतर्क

अमरेली। एशियाई शेरों के दुनिया के एकमात्र प्राकृतिक आवास के रूप में प्रसिद्ध गुजरात का गिर वन क्षेत्र इन दिनों गंभीर चिंता के दौर से गुजर रहा है। मई 2026 में लगातार सामने आई शेरों की मौतों की घटनाओं ने वन विभाग, वैज्ञानिकों और वन्यजीव विशेषज्ञों की चिंताएं बढ़ा दी हैं। अब तक आठ शेरों की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो चुकी है, जिसके बाद पूरे गिर क्षेत्र में हाई अलर्ट घोषित कर दिया गया है। प्रारंभिक जांच में इन मौतों के पीछे किसी संक्रामक बीमारी या वायरस के फैलने की आशंका जताई जा रही है। यही वजह है कि वन विभाग ने तत्काल बचाव और निगरानी अभियान शुरू कर दिया है ताकि संक्रमण को अन्य शेरों और वन्यजीवों तक फैलने से रोका जा सके।

शुरुआत में अधिकारियों को संदेह था कि शेर टिक के माध्यम से फैलने वाले बेबेसिया संक्रमण का शिकार हुए हैं। यह बीमारी जानवरों के रक्त को प्रभावित करती है और उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता को कमजोर बना देती है। हालांकि बाद में जांच के दौरान कैनाइन डिस्टेंपर वायरस (सीडीवी) की आशंका भी सामने आई,

जिसने स्थिति को और गंभीर बना दिया है। सीडीवी एक अत्यंत खतरनाक वायरल संक्रमण माना जाता है, जो मांसाहारी वन्यजीवों में तेजी से फैल सकता है और बड़े पैमाने पर मृत्यु का कारण बन सकता है।

गुजरात के वन एवं पर्यावरण मंत्री अर्जुन मोढवाडिया ने मामले की गंभीरता को स्वीकार करते हुए बताया कि पिछले एक सप्ताह के दौरान गिर के राजस्व क्षेत्र में शेरों की मौतें दर्ज की गई हैं। उन्होंने कहा कि सभी मृत शेरों के नमूने एकत्र कर जांच के लिए भेज दिए गए हैं और रिपोर्ट आने के बाद ही मौतों के वास्तविक कारणों की पुष्टि हो सकेगी। एहतियात के तौर पर प्रभावित क्षेत्र के आसपास लगभग दस किलोमीटर के दायरे में रहने वाले शेरों की विशेष निगरानी की जा रही है और कई जानवरों को अलग-थलग भी रखा गया है ताकि संभावित संक्रमण को फैलने से रोका जा सके।

वन विभाग के अधिकारियों के अनुसार हालात फिलहाल नियंत्रण में हैं और पिछले दो दिनों के दौरान किसी नई मौत की सूचना नहीं मिली है। इसके बावजूद विभाग पूरी सतर्कता के साथ काम कर रहा है। जरूरत पड़ने पर देश के प्रमुख वन्यजीव संरक्षण केंद्रों और विशेषज्ञ संस्थानों की सहायता लेने की भी तैयारी की जा रही है। अधिकारियों ने संकेत दिए हैं कि आवश्यकता पड़ने पर वन्यजीव संरक्षण और उपचार के क्षेत्र में कार्यरत संस्थाओं की मदद भी ली जा सकती है।

मामले की गंभीरता को देखते हुए गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल की अध्यक्षता में गांधीनगर में उच्चस्तरीय बैठक आयोजित की गई। बैठक में वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों, पशु चिकित्सकों और विशेषज्ञों ने भाग लिया। इसके बाद गांधीनगर से एक विशेष जांच टीम को गिर भेजा गया, जिसने गिर पूर्व और गिर पश्चिम के सीमावर्ती क्षेत्रों में व्यापक जांच शुरू कर दी है। वन विभाग के प्रधान मुख्य वन संरक्षक सहित कई वरिष्ठ अधिकारी लगातार हालात की समीक्षा कर रहे हैं और पशु चिकित्सा केंद्रों का दौरा कर उपचार व्यवस्था का जायजा ले रहे हैं।

वन विभाग ने मृत शेरों के नमूने अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं में भेजे हैं। रिपोर्ट आने के बाद यह स्पष्ट हो सकेगा कि मौतों के पीछे बेबेसिया संक्रमण है, कैनाइन डिस्टेंपर वायरस है या कोई अन्य बीमारी जिम्मेदार है। तब तक विभाग किसी भी संभावना को नजरअंदाज नहीं कर रहा है। पूरे गिर क्षेत्र में विशेष सर्विलांस अभियान चलाया जा रहा है, जिसके तहत शेरों की गतिविधियों, उनके स्वास्थ्य और व्यवहार पर लगातार नजर रखी जा रही है। वन्यजीव चिकित्सकों की टीम बीमार या कमजोर दिखाई देने वाले जानवरों की तुरंत जांच कर रही है। विशेषज्ञों के अनुसार बेबेसिया और सीडीवी दोनों ही बीमारियां वन्यजीवों के लिए अत्यंत खतरनाक साबित हो सकती हैं। इन संक्रमणों के कारण जानवरों की रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर पड़ जाती है।

सप्ताह के दौरान सोना वायदा में 2681 रुपये, चांदी वायदा में 5346 रुपये और क्रूड ऑयल वायदा में 805 रुपये की भारी गिरावट

मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर 22 से 28 मई के सप्ताह के दौरान कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 7216572.63 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 263913.39 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 6952658.79 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल साप्ताहिक प्रीमियम टर्नओवर 35232.93 करोड़ रुपये का हुआ।

आलौच्य अवधि के सप्ताह के दौरान कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 160743.17 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना जून वायदा सप्ताह के आरंभ में 159498 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 159500 रुपये और नीचे में 153451 रुपये पर पहुंचकर, 159606 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 2681 रुपये या 1.68 फीसदी की गिरावट के साथ 156925 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर बंद हुआ। गोल्ड-गिनी जून वायदा सप्ताह के अंत में 1739 रुपये या 1.35 फीसदी गिरकर 127275 रुपये प्रति 8 ग्राम हुआ। गोल्ड-पेटल जून वायदा 231 रुपये या 1.43 फीसदी लुढ़ककर सप्ताह के अंत में 15928 रुपये प्रति 1 ग्राम बंद हुआ। सोना-मिनी जून वायदा सप्ताह के आरंभ में 158390 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 159259 रुपये और नीचे में 153149 रुपये पर पहुंचकर, सप्ताह के अंत में 2669 रुपये या 1.68 फीसदी औंधकर 156336 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ। गोल्ड-टेन जून वायदा सप्ताह के आरंभ में प्रति 10 ग्राम 160451 रुपये पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में ऊपर में 161298 रुपये और नीचे में 155525 रुपये पर पहुंचकर, 160872 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 2309 रुपये या 1.44 फीसदी गिरकर 158563 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर पहुंचा।

चांदी के वायदाओं में चांदी जुलाई

कमोडिटी वायदाओं में 263913 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 6952658 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ साप्ताहिक टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 160743 करोड़ रुपये का हुआ साप्ताहिक कारोबार

वायदा सप्ताह के आरंभ में 273800 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 277399 रुपये के उच्च और 261000 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 274883 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 5346 रुपये या 1.94 फीसदी की गिरावट के साथ 269537 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। इनके अलावा चांदी-मिनी जून वायदा 4785 रुपये या 1.72 फीसदी घटकर सप्ताह के अंत में 273803 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ। जबकि चांदी-माइक्रो जून वायदा सप्ताह के अंत में 4754 रुपये या 1.71 फीसदी गिरकर 273840 रुपये प्रति किलो हुआ।

मेटल वर्ग में 29883.40 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा जून वायदा सप्ताह के अंत में 2.25 रुपये या 0.17 फीसदी औंधकर 1360.4 रुपये प्रति किलो पर बंद हुआ। जबकि जस्ता जून वायदा 2.55 रुपये या 0.7 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट सप्ताह के अंत में 367.55 रुपये प्रति किलो पर बंद हुआ। इसके सामने एल्यूमीनियम जून वायदा 3.85 रुपये या 1 फीसदी बढ़कर 387.5 रुपये प्रति किलो के भाव पर सप्ताह के अंत में बंद हुआ। जबकि सीसा जून वायदा सप्ताह के अंत में 1.8 रुपये या 0.88 फीसदी की बढ़त के साथ 207.5 रुपये प्रति किलो के भाव पर बंद हुआ।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 73268.64 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल जून वायदा सप्ताह के आरंभ में 9415 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 9555 रुपये के उच्च और 8409 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, सप्ताह के अंत में 805 रुपये या 8.62 फीसदी लुढ़ककर 8537 रुपये प्रति बैरल बंद हुआ। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी जून वायदा 800 रुपये या 8.57 फीसदी गिरकर सप्ताह के अंत में 8539 रुपये प्रति बैरल के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा नैचुरल गैस जून वायदा सप्ताह के आरंभ में 303 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के दौरान इंट्रा-डे में 315.8 रुपये के उच्च और 286.2 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 304.1 रुपये के पिछले बंद के सामने सप्ताह के अंत में 9.8 रुपये या 3.22 फीसदी की मजबूती के साथ 313.9 रुपये प्रति एमएमबीटीयू बंद हुआ। जबकि नैचुरल गैस-मिनी जून वायदा सप्ताह के अंत में 9.8 रुपये या 3.22 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 313.9 रुपये प्रति एमएमबीटीयू पर बंद हुआ।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल जून वायदा सप्ताह के आरंभ में 990.4 रुपये के भाव पर खूलकर, सप्ताह के अंत में 17.9 रुपये या 1.8 फीसदी गिरकर 975 रुपये प्रति किलो हुआ। कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर आलौच्य अवधि के सप्ताह के दौरान सोना के विभिन्न अनुबंधों में 91136.95 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 69606.21 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 22659.88 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 3525.70 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 135.87 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 3519.68 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 46898.59 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 26196.76 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 16.49 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई।

ओपन इंटरेस्ट सप्ताह के अंत में सोना के वायदाओं में 3064 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 26865 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 12721 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 184608 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 28190 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 10046 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 21926 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 56908 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 12658 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 20031 लोट के स्तर पर था।

पश्चिम रेलवे द्वारा एफओबी गर्डर लॉन्चिंग हेतु,मरीन लाइन्स स्टेशन पर मेजर ब्लॉक लिया जाएगा

पश्चिम रेलवे द्वारा मरीन लाइन्स स्टेशन के प्लेटफॉर्म संख्या 3 एवं 4 के बीच फुट ओवर ब्रिज के गर्डरों की रोड क्रेन के माध्यम से लॉन्चिंग हेतु 30/31 मई, 2026 की मध्यरात्रि में मेजर ब्लॉक लिया जाएगा।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, मरीन लाइन्स स्टेशन पर सभी लाइनों पर मेजर ब्लॉक लिया जाएगा।

इस ब्लॉक के कारण कुछ उपनगरीय सेवाएं रद्द अथवा आंशिक रूप से रद्द रहेंगी।

प्रभावित उपनगरीय सेवाओं का विवरण निम्नानुसार है:

शॉर्ट टर्मिनेट / शॉर्ट ओरिजिनेट होने वाली ट्रेनें:

- ट्रेन संख्या BO91014, जो बोरीवली से 00:10 बजे प्रस्थान कर चर्चगेट 01:15 बजे पहुंचती है, केवल मुंबई सेंट्रल स्टेशन तक ही चलेगी। अतः यह सेवा मुंबई सेंट्रल और चर्चगेट स्टेशनों के बीच रद्द रहेगी।
- ट्रेन संख्या VR91018, जो विरार से 23:49 बजे प्रस्थान कर चर्चगेट 01:26 बजे पहुंचती है, केवल मुंबई सेंट्रल स्टेशन तक ही चलेगी। अतः यह सेवा मुंबई सेंट्रल और चर्चगेट स्टेशनों के बीच रद्द रहेगी।
- ट्रेन संख्या BO91020, जो बोरीवली से 00:30 बजे प्रस्थान कर चर्चगेट 01:35 बजे पहुंचती है, केवल मुंबई सेंट्रल स्टेशन तक ही चलेगी। अतः यह सेवा मुंबई सेंट्रल और चर्चगेट स्टेशनों के बीच रद्द रहेगी।

- ट्रेन संख्या VR91024, जो विरार से 00:05 बजे प्रस्थान कर चर्चगेट 01:45 बजे पहुंचती है, केवल मुंबई सेंट्रल स्टेशन तक ही चलेगी। अतः यह सेवा मुंबई सेंट्रल और चर्चगेट स्टेशनों के बीच रद्द रहेगी।
- ट्रेन संख्या VR90011 चर्चगेट के बजाय मुंबई सेंट्रल से 04:25 बजे शॉर्ट ओरिजिनेट होगी। अतः यह सेवा चर्चगेट और मुंबई सेंट्रल स्टेशनों के बीच रद्द रहेगी।
- ट्रेन संख्या BO90015 चर्चगेट के बजाय मुंबई सेंट्रल से 04:28 बजे शॉर्ट ओरिजिनेट होगी। अतः यह सेवा चर्चगेट और मुंबई सेंट्रल स्टेशनों के बीच रद्द रहेगी।

चर्चगेट तक / से पहली एवं अंतिम सेवाएं निम्नानुसार रहेंगी:

- विरार से चर्चगेट के लिए अंतिम ट्रेन, ट्रेन संख्या VR91012, विरार से 23:30 बजे प्रस्थान करेगी तथा चर्चगेट 01:10 बजे पहुंचेगी।
- चर्चगेट से पहली निर्धारित स्लो ट्रेन, ट्रेन संख्या BO90025, चर्चगेट से 04:46 बजे प्रस्थान करेगी।
- चर्चगेट से पहली निर्धारित फास्ट ट्रेन, ट्रेन संख्या VR90021, चर्चगेट से 04:40 बजे प्रस्थान करेगी।
- यह भी सूचित किया जाता है कि रविवार, 31 मई, 2026 को दिन के समय कोई ब्लॉक नहीं रहेगा।

पश्चिम रेलवे विभिन्न गंतव्यों के बीच चलाएगी दो स्पेशल ट्रेनें

यात्रियों की सुविधा तथा बढ़ती यात्रा मांग को ध्यान में रखते हुए पश्चिम रेलवे विभिन्न गंतव्यों के बीच विशेष किराये पर दो विशेष ट्रेनें चलाएगी, जिससे अतिरिक्त यात्री यातायात को सुगमता से नियंत्रित किया जा सके।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इन ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार है:

1. ट्रेन संख्या 09021/09022 मुंबई सेंट्रल – अहमदाबाद एसी सुपरफास्ट स्पेशल

ट्रेन संख्या 09021 मुंबई सेंट्रल – अहमदाबाद स्पेशल रविवार, 31 मई 2026 को मुंबई सेंट्रल से 06:20 बजे प्रस्थान करेगी तथा उसी दिन 12:40 बजे अहमदाबाद पहुँचेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09022 अहमदाबाद – मुंबई सेंट्रल स्पेशल रविवार, 31 मई 2026 को अहमदाबाद से 15:10 बजे प्रस्थान करेगी और उसी दिन 21:45 बजे मुंबई सेंट्रल पहुँचेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में बोरीवली, वापी, सूरत, भरूच और वडोदरा स्टेशनों पर ठहरेगी।

इस ट्रेन में विस्टाडोम, एग्जीक्यूटिव चेयर कार, एग्जीक्यूटिव अनुभूति तथा एसी चेयर कार कोच होंगे।

2. ट्रेन संख्या 09043/09044 बांद्रा टर्मिनस – अहमदाबाद / वटवा – बांद्रा टर्मिनस सुपरफास्ट स्पेशल

ट्रेन संख्या 09043 बांद्रा टर्मिनस – वटवा स्पेशल सोमवार, 01 जून 2026 को बांद्रा टर्मिनस से 23:45 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन 08:00 बजे वटवा पहुँचेगी। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09044 अहमदाबाद – बांद्रा टर्मिनस स्पेशल सोमवार, 01 जून 2026 को अहमदाबाद से 03:50 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन 12:15 बजे बांद्रा टर्मिनस पहुँचेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में बोरीवली, पालघर, वापी और वडोदरा स्टेशनों पर ठहरेगी।

ट्रेन संख्या 09043 में उधना, आणंद और नडियाद स्टेशनों पर अतिरिक्त ठहराव रहेगा। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09044 में भरूच और सूरत स्टेशनों पर अतिरिक्त ठहराव रहेगा।

इस ट्रेन में एसी 3-टियर, स्लीपर क्लास तथा सामान्य द्वितीय श्रेणी के कोच होंगे।

इन ट्रेन संख्याओं 09021, 09022, 09043 एवं 09044 की बुकिंग 30.05.2026 से सभी पीआरएस काउंटरों तथा आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के ठहराव एवं संरचना की विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर अवलोकन कर सकते हैं।

गर्मी बन रही जानलेवा, एक दिन में 3400 मौतों का दावा ने बढ़ाई चिंता

नई दिल्ली। देश में लगातार बढ़ रही भीषण गर्मी अब केवल असुविधा का विषय नहीं रह गई है, बल्कि यह एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट का रूप लेती जा रही है। हाल ही में प्रकाशित एक शोध रिपोर्ट ने चौंकाने वाला दावा किया है कि अत्यधिक गर्मी के कारण देशभर में एक ही दिन में औसतन 3400 लोगों की मौत हो सकती है। वहीं यदि लू का प्रकोप लगातार पांच दिनों तक बना रहे तो इससे लगभग 30 हजार लोगों की जान जाने का खतरा पैदा हो जाता है। यह अध्ययन भारत में जलवायु परिवर्तन के बढ़ते प्रभाव और उससे उत्पन्न स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों की गंभीर तस्वीर प्रस्तुत करता है।

यह शोध इंडिया एनर्जी एंड क्लाइमेट सेंटर के शोधकर्ता पीयूष नारंग और अशोक गाडगिल के साथ अमेरिका की कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी के जलवायु विशेषज्ञों द्वारा किया गया है। अध्ययन के लिए भारत के दस प्रमुख शहरों और विभिन्न राज्यों के तापमान, जनसंख्या घनत्व, मृत्यु दर तथा हीटवेव के प्रभावों से जुड़े आंकड़ों का विस्तृत विश्लेषण किया गया। शोध के निष्कर्ष अंतरराष्ट्रीय जर्नल फ्रंटियर्स इन एनवायरनमेंटल हेल्थ में प्रकाशित हुए हैं, जिसने नीति निर्माताओं और स्वास्थ्य विशेषज्ञों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। रिपोर्ट के अनुसार उत्तर भारत, मध्य भारत और पूर्वी भारत के कई हिस्सों में तापमान लगातार खतरनाक स्तर तक पहुंच रहा है। मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और हरियाणा के अनेक क्षेत्रों में तापमान 45 डिग्री सेल्सियस से ऊपर दर्ज किया गया है। वैज्ञानिकों का कहना है कि बढ़ते तापमान के कारण मानव शरीर की तापमान नियंत्रित करने की क्षमता प्रभावित होती है, जिससे हीट स्ट्रोक, डिहाइड्रेशन, हृदय संबंधी समस्याएं और अन्य गंभीर बीमारियों का खतरा कई गुना बढ़ जाता है। शोध में यह भी सामने आया है कि पांच दिन तक चलने वाली तीव्र लू का सबसे अधिक असर उत्तर प्रदेश पर पड़ सकता है। अनुमान के मुताबिक केवल उत्तर प्रदेश में ही पांच दिन की हीटवेव के दौरान लगभग 8100 लोगों की मौत हो सकती है। इसके अलावा अहमदाबाद, जयपुर और सूरत जैसे शहरों में भी गर्मी के कारण प्रतिदिन लगभग 250 लोगों की जान जाने का अनुमान व्यक्त किया गया है। विशेषज्ञों का मानना है कि शहरी क्षेत्रों में कंक्रीट संरचनाओं की अधिकता, हरित क्षेत्र की कमी और बढ़ते प्रदूषण के कारण हीट आइलैंड प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है, जिससे गर्मी का असर और अधिक घातक हो जाता है। रिपोर्ट में एक और महत्वपूर्ण तथ्य सामने आया है कि गर्मी से होने वाली कुल मौतों में लगभग 66 प्रतिशत हिस्सेदारी उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान और गुजरात जैसे राज्यों की है। जबकि देश की कुल जीडीपी में इन राज्यों का योगदान केवल 29 प्रतिशत के आसपास है। इससे स्पष्ट होता है कि आर्थिक रूप से अपेक्षाकृत कमजोर और संसाधनों की कमी वाले क्षेत्रों में गर्मी का प्रभाव अधिक विनाशकारी साबित हो रहा है।